RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 61 अंक : 08 प्रकाशन तिथि : 25 जुलाई कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 अगस्त 2024

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

युग युग से हैं लगे यहाँ पर देवों के दरबार
इस आँगन में राम थे खेले, खेले कृष्ण कुमार, झूम उठे अवतार ।।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
SS KIRTEE
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED COMPANY
Piping is Our Business Satisfaction is Our Goal
Mr. Surendra Singh Shekhawat
Director
Shree Ganesh Enterprises
17425
CML-8600120461
IS:12786
CML-8600120457
IS:4984
CML-8600120464
Manufacture Of:-
SS KIRTEE BRAND ISI HDPE Sprinkler Pipe
Mini Sprinkler System | HDPE Pipes & Coils For Water
SHREE GANESH ENTERPRISES
Khasra No. 315/6, 317,318, RIICO Road, Prasrampura, SKS Industrial Area
Reengus, Sikar (Rajasthan)
8209398951 surendrasinghshekhawat234@gmail.com
GANESH
HOTEL
Ganesh Singh Maharoli
Datar Singh Maharoli
Opp. Polovictory Cinema. Station Raod, Jaipur | Contact No. 9929105156

संघशक्ति

4 अगस्त, 2024

वर्ष : 61 अंक : 08

-: सम्पादक :-

राजेन्द्र सिंह राठौड़

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

समाचार संक्षेप	✍	04
चलता रहे मेरा संघ	✍ श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर	06
पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)	✍ श्री चैन सिंह बैठवास	07
श्री कृष्णावतार	✍ श्री सुदर्शनसिंह 'चक्र'	09
महायोगी श्री अरविन्द और महा कर्मयोगी....	✍ श्री अजीतसिंह धोलेरा	12
स्वार्थ रहित सेवा की महिमा	✍ श्री जयदयाल गोयन्दका	15
सोमनाथ	✍ श्री नन्द किशोर 'योगी'	19
जब धड़ से अंगरखे से तलवार पौंछ......	✍ श्री युधिष्ठिर	22
जिन्दगी का सत्य	✍ रश्मि रामदेरिया	25
आदर्श और अनूठे गाँव	✍ कर्नल श्री हिम्मत सिंह	27
अपनी बात	✍	30

समाचार संक्षेप

शाखा वर्ष

श्री क्षत्रिय युवक संघ ने इस वर्ष को शाखा वर्ष के रूप में मनाने का निश्चय किया है। इसी के अन्तर्गत अनेक प्रकार के कार्यक्रम सम्पन्न होने प्रारम्भ हो गए हैं। संघ के प्रत्येक स्वयंसेवक को चाहिए कि वह स्वयं शाखा में निरन्तर जाता रहे। वर्ष में समय निकाल कर शिविर भी करता रहे। जहाँ शाखा नहीं लग रही है, वहाँ शाखा प्रारम्भ करने का प्रयास करे। निरन्तर और नियमित गाँव-गाँव में संघ को पहुँचाने के लिए प्रयासरत रहे। संघ की बात हर क्षेत्र में पहुँचाने के लिये भ्रमण कार्यक्रम, स्नेह मिलन कार्यक्रम, सामुहिक यज्ञ कार्यक्रम, महापुरुषों की जयन्तियों के कार्यक्रम किए जाते रहें। जहाँ शाखाएँ लग रही हैं, वहाँ की कार्यविधि को आदर्श बनाने का प्रयत्न लगातार चलता रहे।

शाखा वर्ष के कार्यक्रम में सक्रियता लाने और दूर-दराज कार्यरत स्वयंसेवकों से सम्पर्क स्थापित करने के लिये संघप्रमुखश्री ने गांधीनगर (गुजरात) के प्रशिक्षण शिविर के पश्चात् जून माह से ही संघ के विभिन्न संभागों में पहुँचकर सम्पर्क प्रारम्भ कर दिया है। 8 व 9 जून को सुरेन्द्रनगर (गुजरात), 10 व 11 जून को बाड़मेर, 12 व 13 जून को जैसलमेर, 14 वे 15 जून को जोधपुर, 15-16 जून को बालोतरा व 16-17 को जालोर पहुँचकर सम्पर्क किया। 30 जून को जयपुर में ही जयपुर, पूर्वी राजस्थान व दिल्ली संभाग के स्वयंसेवकों से सम्पर्क किया। सभी जगह कार्य योजना बननी प्रारम्भ हो गई। 13 व 14 जुलाई को मुम्बई पहुँचकर विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा सम्पर्क किया। मातृशक्ति के कार्यक्रम भी आयोजित हुए। उससे पूर्व 6-7 जुलाई को उदयपुर में संघप्रमुखश्री ने सम्पर्क किया। सामुहिक पारिवारिक शाखा में सम्मिलित हुए। यहाँ मेवाड़, मालवा, वागड़ संभागों का सामुहिक कार्यक्रम था।

संघ की बात गाँवों में पहुँचाने के लिए गाँव में पहुँचकर विशेष शाखा का तथा सामुहिक यज्ञ का आयोजन भी किया जा रहा है। जैसलमेर जिले के राजगढ़ में 16 जून को विशेष शाखा व सामुहिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में गाँव के समाज के पुरुष व महिलाएँ सम्मिलित रहती हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय भी सबको दिया जाता है। 23 जून को पोकरण क्षेत्र के सनावड़ा में विशेष शाखा व सामुहिक यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। बच्चों को ऐतिहासिक जानकारियाँ भी ऐसे कार्यक्रमों से दी जाती है। पोकरण प्रान्त के ही हरियासर गाँव में 30 जून को ऐसे ही कार्यक्रम में सामाजिक जागरण की लहर पहुँचाई गई। 30 जून को ही भीलवाड़ा के मालोला गाँव में, 7 जुलाई को पाली प्रान्त के बेड़ा गाँव स्थित आशापुरा माताजी मंदिर में, 7 जुलाई को ही उदयपुर जिले के गोगुन्दा गाँव स्थित अम्बा माताजी मंदिर परिसर में, 30 जून को मल्लीनाथ मंदिर परिसर राजमथाई में और चित्तौड़गढ़ के चंदेरिया में विशेष शाखा तथा सामुहिक यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संघ की बात पहुँचाने के लिये उत्तर गुजरात संभाग के मेहसाणा प्रान्त के विभिन्न गाँवों में 16 जून को सम्पर्क यात्रा की गई। इन गाँवों में संघ के उद्देश्य एवं कार्य प्रणाली की जानकारी दी गई। यात्रा के दौरान इन गाँवों में शाखाएँ प्रारम्भ करने का निश्चय किया जिनमें चार बालिका शाखाएँ हैं। 23 जून को मध्य गुजरात संभाग के महिसागर प्रान्त के गाँवों में भी ऐसी ही यात्रा का आयोजन रहा। उजीना (मेवात) राजपूत बाहुल्य गाँव है, वहाँ भी सम्पर्क बैठक रखी गई। संघ की जानकारी दी गई। यहाँ प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर की भी चर्चा की गई।

विभिन्न प्रान्तों के सहयोगी वर्ष भर की कार्ययोजना बनाने में भी लगे रहे हैं। 16 जून को शेखावाटी संभाग की वार्षिक कार्ययोजना बैठक बणीर राजपूत छात्रावास, चूरू में सम्पन्न हुई। 16 जून को ही अजमेर प्रान्त की कार्ययोजना फार्म हाउस बिलीया (केकड़ी) में आयोजित रही। 30 जून को चित्तौड़गढ़ प्रान्त की कार्ययोजना बैठक शहर स्थित ऋतुराज वाटिका में सम्पन्न हुई। गुजरात में पालनपुर प्रान्त की कार्ययोजना भी 30 जून को ही पालनपुर स्थित सरस्वती माध्यमिक विद्यालय में आयोजित रही। सिरोही का प्रान्तीय स्नेह मिलन व कार्ययोजना बैठक 2 जून को भटाना गाँव में सम्पन्न हुए। लाडनू व डीडवाना प्रान्त का संयुक्त स्नेह मिलन 9 जून को लाडनू में आयोजित हुआ। इसमें एक वर्ष की कार्ययोजना तैयार की गई।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के अनुषांगिक संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की दो दिवसीय कार्ययोजना 15-16 जून को चित्तौड़गढ़ के मुरलिया गाँव में सम्पन हुई। समाज के प्रति हमारे आत्मीय भाव को हमारी सक्रियता में प्रकट करने में ये कार्यक्रम सहायक हैं। 15-16 जून को अजमेर-केकड़ी टीम द्वारा राष्ट्रवर फार्म हाउस सापणदा (केकड़ी) में भी क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की कार्यशाला आयोजित रही। 22-23 जून को पुष्कर स्थित राजस्थान रिजोर्ट में भी कार्यशाला आयोजित रही। 29-30 जून को सरदारशहर में तथा 6-7 जुलाई को भीलवाड़ा के बनेड़ा में कार्यशालाएँ सम्पन्न हुई। क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन द्वारा केकड़ी में समाज के विद्यार्थी बच्चों को मार्गदर्शन देने हेतु कैरियर काउंसलिंग कार्यशाला का आयोजन 7 जुलाई को रखा गया।

जून माह में 13 शिविर सम्पन्न हुए। जुलाई हेतु 20 शिविरों की सूचना तो है ही, एक-दो और भी हो सकते हैं। संघशक्ति परिसर जयपुर में विभिन्न कार्यक्रम संघ के होते रहते हैं। अपनी निकटता बढाने के लिये शाखाओं का भ्रमण कार्यक्रम भी कई जगह होता है। अधिकतम संख्या दिवस मनाए जा रहे हैं। सभी कार्यक्रमों का विषय संघ की शाखाओं का विस्तार है। महापुरुषों की जयंतियाँ भी मनाई जा रही हैं।

दायित्व बोध कार्यक्रम

आज राजनैतिक क्षेत्र में हमारे समाज की स्थिति असंतोष ही पैदा करती है। राजनैतिक दलों का रुख भी समाज के प्रोत्साहनजनक नहीं है तो समाज का सोच भी आज की राजनैतिक परिस्थिति में जैसा होना चाहिए वैसा नहीं है। हमारा समाज किसी राजनैतिक दल का बंधक बनकर रहने के लिये नहीं है। परन्तु आज की परिस्थिति ने अनुकूल निर्णय लिए जाने की आवश्यकता है। इसलिए श्री प्रताप फाउण्डेशन ने 4 जुलाई को संघशक्ति जयपुर परिसर में कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में समाज के सांसद, समाज के विधायक, समाज के राजनैतिक कार्यकर्ता आमंत्रित किए गये। कार्यक्रम में राजस्थान के हर क्षेत्र से कार्यकर्ता पहुँचे। हम परस्पर प्रतिस्पर्धा में न उलझ कर सामुहिक रूप से मिलकर सामाजिक समस्याओं के लिए संघर्ष करें, इसकी आज प्रमुख आवश्यकता है। जो भी कार्यकर्ता है, विधायक है, सांसद है, उसका दायित्व है अपनी क्षमतानुसार समाज हित के कार्य में जुटना। इस दायित्व का बोध आज नहीं रहा है, इसीलिए हम राजनैतिक दृष्टि से पिछड़ते जा रहे हैं। प्रतिस्पर्धा आज चारों ओर व्याप्त है। घरेलू सीमा में भी उसने प्रवेश कर लिया है। ऐसे में राजनैतिक क्षेत्र में तो इसने मुख्य स्थान बना ही लिया है। हमारे समाज के प्रति दायित्व को सदैव याद रखते हुए चलें तो प्रतिस्पर्धा में कमी आएगी। कई विधायक व सांसदों ने अपनी बात रखी।

●

चलता रहे मेरा संघ

(भवानी निकेतन जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर 2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर द्वारा 29.5.2023 को प्रदत्त प्रभात संदेश)

संपूर्ण योग मार्ग। श्री क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग है-संपूर्ण योग मार्ग। योग कहते हैं मिलन को। किससे किस के मिलन की बात है? यह दो आदमियों का मिलन नहीं है। न ही यह दो राष्ट्रों का मिलन है। कुछ भूल पड़ जाने के कारण जहाँ से हम बिछुड़े हैं, पुन: उसी में मिलना, जिस परमशक्ति के हम अंश हैं, और इस बात को हम भूल गये हैं, पुन: उसी से मिलना, यह श्री क्षत्रिय युवक संघ का संपूर्ण योग मार्ग है।

योग की, प्रारम्परिक योग की जो प्रक्रिया है-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, ईश्वर प्रणिधान, धारणा, ध्यान, समाधि; क्षत्रिय युवक संघ की संपूर्ण साधना में ये सब समाया हुआ है। इसकी विशद चर्चा आप लोगों ने सुनी है। थोड़ी देर पहले आप गा रहे थे-

कितने जगमग दीपक जलते, आँख नहीं तो व्यर्थ जले हैं
करने आए कर न सके तो, जीवन तरुवर व्यर्थ फले हैं

संपूर्ण योग मार्ग के माध्यम से हमें योग की प्राप्ति करनी है। यह हम करने आए हैं, इसके लिए हमें भेजा गया है। हमारी सत्ता के स्वामी ने हमें इस दृष्टि में कुछ कर्तव्य देकर के भेजा और वह कर्तव्य ही हमारा धर्म है। उसी को, उस कर्तव्य कर्म को ही हम क्षात्रधर्म कहते हैं। तो क्षत्रिय युवक संघ क्षात्रधर्म का पालन करते हुए पुन: ईश्वर में मिलने का मार्ग है जिसे पूज्य तनसिंह जी ने हमें बताया है और वही मार्ग हमने अपनाया है। परन्तु यह योग क्रिया संपूर्ण समर्पण के बिना सम्भव नहीं है। समाज के प्रति जो हमारा समर्पण है वह योग की ही सीढी है। इस पर बढते रहने से ही योग घटित होगा।

हम परमपिता परमेश्वर से यह प्रार्थना करें कि हमारे जीवन में वह संपूर्ण योग मार्ग अवतरित हो और हम परमेश्वर से मिलन को प्राप्त हों, जो हमारा मुख्य ध्येय है। आज के मंगल प्रभात में क्षत्रिय युवक संघ की ओर से यही मंगल संदेश है।

●

पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

पूज्य श्री तनसिंह जी ने एक दिन नारायणसिंह जी रेड़ा को पूछा-तुम्हें पैसे कितने चाहिए? पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा का उत्तर-''हाथ नहीं अटके'' यानी जरूरत के अनुसार पैसा मिलता रहे। ऐसी बात संत या महापुरुष ही कह सकते हैं। पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा जानते थे कि मैं जो इच्छा जाहिर करूँगा, उनकी कृपा से आज मुझे वह सब कुछ मिलने वाला है, वो मेरी बात पर तथास्तु ही कहेंगे। यह बात तो पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा की हुई। अब दूसरी ओर देखिये-साधारणतया आम लोगों की नजर सिर्फ और सिर्फ पैसों पर है। पैसा ही उनका साध्य है। इस जीवन में जितना संग्रह कर सकता हूँ कर लूं, यही लालसा बनी रहती है। लाख है तो दो लाख कर लूं, दस लाख कर लूं। करोड़ है तो दस करोड़ कर लूं, बीस करोड़ कर लूं, अरबपति बन जाऊँ, इस तरह गुणित करने की लालसा बढ़ती ही जायेगी कभी शान्त नहीं होने की। इतना है तो इतना और कर लूं, इस तरह पैसे की भूख कभी शान्त नहीं होने की। यह सारा संसार कोल्हू के बैल की भाँति पैसा कमाने के चक्कर में है। अचानक लॉटरी खुलने पर आपको जो खुशी होगी, इतनी खुशी भगवान मिलने पर भी नहीं होगी, तो देखिये पैसे की चमक के सामने भगवान की चमक भी फीकी है। यहाँ पैसों को लेकर हमारे सामने दो वृत्ति आयी है, जो एक दूसरे के बिलकुल विपरीत है। एक वृत्ति संतोष की है जो संत वृत्ति कहलाती है। दूसरी वृत्ति लालसा (लालच) की है जो साधारणतया आम है। ये वे लोग हैं, जो जितना संग्रह कर सकते हैं, कर लें, इसी में इनका जीवन खपता जा रहा है।

हाँ, यह जरूर है पैसे की जगह पैसा ही काम आता है। पैसे का काम बातों से नहीं होता, पैसे से ही होता है, इसलिए पैसे की उपेक्षा तो कतई नहीं की जा सकती। जरूरत के अनुसार पैसा मिल जाये-पैसे से इतना ही तालुक बना रहे, यहाँ तक तो ठीक है पर जीवन में पैसे के सिवाय कुछ नहीं, हाय पैसा-हाय पैसा करके पैसे के पीछे पागल हो के पड़ना, कितनी बुरी बात है। इसका अभिप्राय तो यह हुआ, कि हमारे जीवन का जो हेतु भगवान ने तय किया है, उसको हम भूल गये हैं और अपने पथ से भटकते जा रहे हैं।

पैसे की महत्ता जरूर है, पर है वो अपनी जगह। सब कुछ पैसा, यह नहीं। पैसे की जीवन में क्या अहमियत है, क्या कीमत है इस सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी ने जो कहा, उन्हीं की जुबानी-

''कहाँ नहीं चाहिए पैसा? हर बात में चाहिए। क्या आप उसकी सर्वथा उपेक्षा कर सकते हैं। असम्भव! सिद्धान्त आपके पास बड़े ऊँचे हैं मगर भुक्कड़ कहलायेंगे। आपकी सभी बातों पर विश्वास कर सकते हैं, बड़ी सरलता से विश्वास कर लेंगे लेकिन पैसे के मामले में आपका तभी विश्वास किया जाएगा जब आपके पास पैसा होगा। यदि आपके पास पैसा है, तो टूटे-फूटे सिद्धान्तों से भी आप विश्वविजय कर सकते हैं।

''जी हाँ सुना होगा। जमानत रुपयों में भरी जाती है, पर यह बात और भी अधिक इस बात को पुष्ट करती है, कि आदमी की कीमत भी रुपयों में ही आंकी गई है।

''कविताएँ, भावनाएँ, लेख, प्रेरणास्पद भाषण सब अपनी-अपनी जगह अच्छे हैं। इनके बिना आदमी जी सकता है, पर रुपये की जगह दस कविताएँ पढ़ दीजिये, चार भाषण झाड़ दीजिये, चार आँसू बहा दीजिये पर कर्जे का भुगतान इन किसी से नहीं होगा। रोकड़ से ही होने का है। मैं रोकड़ रुपये की बात करता हूँ। सुना नहीं लोग अपने गहने, आभूषण, सोने की चैन या घड़ी गिरवी रख देते हैं..... रुपये के लिये, लेकिन रुपया कभी गिरवी रखा गया सुना?

''जिनके पास पैसा बहुत है, वे इसकी सही कीमत नहीं जानते। वे भ्रम में हैं कि पैसा उनकी करामात है, लेकिन मेरा तो यही कहना है कि यह पैसे की ही करामात है, कि वे धनी कहलाए। हो सकता है, धनी लोग पैसा अधिक खर्च करते हैं, लेकिन मैं कत्तई नहीं मानता। आमदनी के अनुपात में धनी का खर्चा गरीब के अनुपात से कहीं अधिक कम होगा।

''जिनके पास पैसा नहीं है, या नहीं रहा, वे भी पैसे की कीमत नहीं जानते। क्योंकि जिसने शराब पीयी ही नहीं, वही शराब के अवगुण बताये, तो यह रटी-रटाई बातें कहना है। पैसे की महिमा वही जानता है, जिसके पास पैसा आता भी है और ठीक अवसर पर गायब हो जाता है।

''जो पैसे की महिमा नहीं जानते, वे कितनी ही डींगें मार लें, हैं मूर्ख ही। पैसे की जरूरत पैसे से ही पूरी होती है। भगवान की बात तो नहीं कहता, क्योंकि उसके हाथ तो बहुत लम्बे हैं, वह सर्व शक्तिमान भी है, लेकिन उसके सिवाय मुझे इस दुनिया में प्रिय लगने वाले मेरे साथी ही हैं और यदि मुझे कोई कहे कि तुम्हारी प्रिय वस्तुओं में तीसरी चीज क्या है, तो मैं निःसन्देह बिना झिझक यही कहूँगा कि मुझे पैसा प्रिय है। रुपया कहो, चाहे पैसा कहो, लक्ष्मी कहो, धन समृद्धि कहो, बात एक ही है, केवल नाम मात्र का फर्क है।''

पैसे की जरूरत पैसे से ही पूरी होती है, इसलिए जीवन में आवश्यकता अनुरूप बचत भी करनी चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर आपका हाथ अटके नहीं, किसी से उधार माँगना न पड़े, किसी के सामने हाथ फैलाना न पड़े। अपना संग्रह किया पैसा समय-असमय काम आ जावे और अपना अटका काम निकल जावे। इस सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा -

''संग्रह करना बुरा है, यह उपदेश की बात हुई, व्यवहार की बात यह है, कि संग्रह करना बहुत कठिन है। खैर संग्रह की बातें छोड़िये। सरकारी भाषा में कहूँ तो बचत करना सीखिये। देखिये कि वास्तव में बचत कैसे होती है, कब होती है, जब पैसा हाथ से निकल जाए। भले ही वह बैंक में जमा हो, दुकान में लग जाए और सबसे बुरी बात कि वह उधार में खप जाए। पैसे को हाथ से निकालकर ही बचत होती है। हाथ में रखे-रखे तो वह खर्च ही होता है।

''बचत करना क्यों अच्छा है। भगवान आपसे रूठ सकता है, तकदीर आपको दगा दे सकती है, यहाँ तक की आपका अंतरंग आत्मीय आपको धोखा दे सकता है, लेकिन जब तक सरकारी तौर पर अवमूल्यन न हो, पैसा कभी धोखा न देगा। वह हमेशा रुपये के बदले में सौ की तादाद में ही गिना जाएगा।

''तो मेहरबान! पैसा बचाइये। उसे उसी काम में खर्च करें जिससे पैसा उत्पन्न हो। जो खर्च उत्पादक नहीं वह बेकार खर्च है, फिजूल खर्ची है। यह फिजूल खर्चा बन्द कीजिये और आपकी व आपके आस-पास की तथा देश की गरीबी को दूर करने के यज्ञ में आहुति प्रदान कीजिये। पैसे का काम बातों से नहीं होता।

''आमदनी और खर्च यह दो रूप हैं पैसे की आवागमन के। जो लोग आमदनी के और खर्च के अनुपात संतुलन खो देते हैं, उन्होंने अपनी इज्जत खो दी है। उस प्रतिष्ठा में कुछ नहीं धरा है, जो खर्चे के बल पर स्थापित की जाती है। आमदनी वह संजीवनी है जिससे जीवन व्यापार का सिलसिला जारी रहता है। यदि वह अनवरत है तो खर्चों का तालमेल बैठाया जा सकता है, लेकिन यदि वह कभी-कभी होती हो तो हमेशा संचित धनराशि ही महत्त्व की है। जीवन को ऐसा बना डालिये कि आपके खर्चों के बावजूद भी आपका हाथ कभी खाली न हो।

''आय और व्यय का हिसाब लगाते हुए प्रायः हम आय के लिए अधिक आशावादी हो जाते हैं और व्यय को छोटा-सा दुश्मन मानने की भूल कर बैठते हैं। परिणाम यह होता है कि आपकी आशा धूमिल हो जाती है और उसका काफी प्रतिशत अशुद्ध अनुमानों के रूप में समाप्त हो जाता है। दूसरी ओर व्यय का दुश्मन-बल राक्षस बन जाता है और हमें हाथ पाँव बाँधकर विवशता के अन्तहीन सागर में डाल देता है।''

(क्रमशः)

श्री कृष्णावतार

– सुदर्शनसिंह 'चक्र'

महर्षि गर्ग ने पीछे भगवान् वासुदेव की जन्म पत्रिका बनायी थी। उनका कहना था–'भाद्रपद कृष्ण अष्टमी की अर्ध रात्रि थी। इस रात्रि का नाम जयन्ती है। विजय नाम का मुहूर्त था। रोहिणी नक्षत्र का तृतीय चरण प्रारम्भ हुआ था। बुधवासर था और हर्षण योग था।'

'वृष लग्न, लग्न में चन्द्र और केतु, चतुर्थ में सिंह का सूर्य, पञ्चम में कन्या का बुध, षष्ठम् में तुलापर शुक्र और शनि, सप्तम, वृश्चिक का राहु, नवम् मकर का मंगल और एकादश में मीन का गुरु था।'

अर्धरात्रि का वह धन्यकाल–धरा पर घोर अन्धकार को विदीर्ण करता प्राची में क्षितिज से इन्दु की अमृतमयी किरणें ऊपर उठीं और उसी समय, समकाल ही, कंस के कारागार के उस कक्ष में देवी देवकी के सम्मुख वह दिव्य ज्योति प्रकट हुई जिसने त्रिभुवन में छाये तमसावरण को विच्छिन्न कर दिया।

गगन का चन्द्र कलंकित है, अष्टमी को आधा ही रहता है। घटता–बढ़ता है। लेकिन देवी देवकी के सम्मुख जो कृष्णचन्द्र प्रकट हुआ, वह नित्यपूर्ण पुरुष, उसका स्मरण निखिल कलंक कल्मष को ध्वस्त कर देता है।

महामुनि गर्गाचार्य जी ने जब अवसर आने पर नामकरण किया तो कहा था–'ये भगवान् वासुदेव मुकुन्द हैं। इनका सहज गुण है अनन्तकाल से अविद्यान्धकार में भटकते जीव को मुक्ति दान करना।'

'विष्वक्सेन' यह नाक्षत्रिक नाम उसी रात्रि में वसुदेव जी ने रखा था अपने कुमार का; किन्तु यह नाम लोक में प्रचलित नहीं हुआ। लोक में तो वासुदेव ऐसे प्रिय हुए कि पीछे पौण्ड्रक तथा शृगाल अपने को वासुदेव कहने लगे।

माता देवकी को लगा था कि उन्हें तन्द्रा आ गयी है। समस्त धार्मिक, भक्तिप्राण प्राणियों के समान वसुदेव जी भी घनीभूत सत्वगुण के कारण अन्तर्मुख हो गये थे। एक आनन्द समाधि में निमग्न थे वे।

अचानक कारागार का वह कक्ष सहस्र–सहस्र पूर्णचन्द्र के सम्मिलित प्रकाश के समान दिव्य ज्योति से प्रकाशित हो उठा। वसुदेव जी ही सर्वप्रथम सावधान हुए। उन्होंने देखा देवकी के सम्मुख दिव्य शिशु खड़ा है मन्द–मन्द मुस्करा रहा है। वह नवजलधर सुन्दर, तडिदाम्बर, वनमाली, रत्न किरीटी। अपनी विशाल भुजाओं में उसने कंकण, अंगद आदि धारण किये हैं। करों में शंख, चक्र, गदा और पद्म हैं। कण्ठ में महामणि कौस्तुभ है। वक्ष पर वनमाला के मध्य श्रीवत्स चिह्न है। कटि में रत्नमेखला है। चरणों में नूपुर हैं।

एक दृष्टि पर सर्वांग पर घूम गयी। नवनीत सुकुमार सर्वांग और उसमें ज्योत्स्ना झर रही है। दृष्टि मुख पर आयी–पल्लव मृदुल मुस्कराते अधर, विशाल भाल पर तिलक, बंक भृकुटि और दीर्घ दृग–दृष्टि उन कृपावर्षण करते दृगों पर लगीं और स्थिर हो गयी।

'श्रीहरि स्वयं पधारे!' वसुदेव जी का सम्पूर्ण शरीर रोमांचित हो गया। रोम–रोम से स्वेद–धारा चलने लगी। कई क्षण वे केवल देखते रहे। नेत्र के पलक तक गिर नहीं सकते थे।

कुछ क्षण लगे स्वस्थ होने में। वसुदेव जी ने अंजलि बाँध ली। मस्तक झुकाया। बेड़ी में जकड़े पदों को मोड़कर घुटनों के बल गये और स्तवन करने लगे। 'आप साक्षात् परमपुरुष हैं। प्रकृति से पार केवल अनुभव स्वरूप हैं। समस्त बुद्धियों के द्रष्टा हैं। सर्वस्वरूप, सर्वसाक्षी, सबके प्रकाशक, स्वयंप्रकाश प्रभु। इस विश्व के निमित्तोपादान कारण। इस सृष्टि के उत्पत्ति, पालन, संहार के मूल हेतु! आप यहाँ अपनी माया से युग–युग में अवतीर्ण होते हैं,

अतः इस समय भी प्रकट हुए हैं। इस धरा को धन्य करने, असुरों का संहार करने, भक्तों का भय मिटाने मेरे यहाँ प्रगट हुए आप; किन्तु निखिलेश्वर! कंस के अनुचर उसे समाचार देंगे तत्काल और वह शस्त्र उठाये दौड़ता अभी आवेगा।'

वसुदेवजी ने अपने हथकड़ी में जकड़े करों की ओर देखा। वे कितने असहाय हैं। ये चक्र और गदा लिये सम्मुख जो तेजोमय खड़े हैं- लेकिन वात्सल्य उमड़ रहा है। ये शिशु हैं और एकाकी हैं।

'कंस आता होगा अभी!' वसुदेव जी के शब्द कानों में पड़े और देवकी जी ने चौंककर नेत्र खोल दिये। उन्होंने जो सम्मुख देखा-देखती रह गयीं। उस स्थिति में भी उनके श्रीमुख पर मुस्कान आ गयी। वे भी अपने स्वामी के समान बद्धाञ्जलि बैठ गयीं और स्तवन करने लगीं।

'जानती हूँ कि जिसे ऋषि-मुनि अव्यक्त, आदि, निर्गुण, निर्विकार निर्विशेष कहते हैं, वे अध्यात्मदीप विष्णु तुम्हीं हो। संमस्त लोक जब काल के गाल में चले जाते हैं-प्रलयकाल जब सब लोकों को निगल लेता है, तब भी तुम शेष रहते हो और अनन्त शैय्या पर सोते रहते हो। यह सर्वग्रासी काल तुम्हारी चेष्टा मात्र है। इस कालरूप सर्प से सन्त्रस्त मानव भागता रहता है और कहीं-किसी लोक में आश्रय नहीं पाता; किन्तु जब तुम्हारे चरणों में पहुँच जाता है, तब निर्भय हो जाता है। काल-सर्प उसे छोड़कर तब भाग जाता है।'

'तुम प्रलयमें भी निर्भय निश्चिन्त सोते हो। काल तुम्हारी चेष्टा है। तुम्हारे चरणों का आश्रय जीव को काल से निर्भय कर देता है- यह जानती हूँ, किन्तु मेरा हृदय इस समय बहुत व्याकुल हो रहा है। तुम्हारे लिए मैं बहुत चिन्तित हूँ। कंस सर्वथा पिशाच है- अत्यन्त घोर है और आता ही होगा वह। तुम तो अपने जनों का त्रास दूर करने वाले हो, मेरा यह त्रास दूर करो- तुम्हारे लिए मैं बहुत भयभीत हूँ।'

'एक बात और। बड़ी विडम्बना है कि तुम मेरे गर्भ से प्रकट हुए। समस्त लोक कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड तो तुम्हारे रोम कूपों में रहते हैं... नहीं इस चतुर्भुज रूप को छिपा लो। यह तो ध्यान का सौभाग्य, महापुरुषों की ध्येयमूर्ति है। इसे अभी स्थूल देह-दर्शियों के सम्मुख मत करो।'

'माता!' अब वे परमपुरुष बोले। उनका वह मेघ गम्भीर स्वर वह परावाणी- 'पहिले स्वायम्भुव मन्वन्तर में आप पृश्नि थीं और ये पिता, निष्पाप प्रजापति सुतपा थे। सृष्टिकर्ता ने आदेश दे दिया था आप दोनों को प्रजा की सृष्टि करने का । वर्षों तक आप दोनों ने इन्द्रियों को संयमित करके, वर्षा, आतप, हिमपात सहते हुए घोर तप किया था।'

वसुदेव तथा देवकी जी को लगा कि अब भी वे तप ही कर रहे हैं। उन्हें अपना यह देह, यह काल, यह कारागार भूल ही गया। वे मेरु के शिखर पर तप कर रहे हैं-अभी तप ही तो कर रहे हैं और आज उनका तप सार्थक हुआ है। ये उनके आराध्य प्रकट हुए उनके सामने।

'मैं तब भी ऐसे ही प्रकट हुआ था आपके सम्मुख।' वे परमपुरुष कह रहे थे- 'मैंने तब कहा था वरं ब्रूहि' और आप दोनों ने एक साथ कहा था- 'तुम्हारे समान पुत्र हो हमें।'

इस समय वे बोलते न चले गये होते तो दोनों ही अपना वही वरदान माँगने ही जा रहे थे। उन्हें कहाँ दूसरा वरदान आज भी चाहिये।

'मैंने कहा था- 'दिया! दिया! दिया!' और वह तीन बार कही मेरी बात सत्य होनी चाहिये थी। उस समय मैं आपका पुत्र बना। अपने समान मैं दूसरा कहाँ से लाता। मुझे तब सभी पृश्निगर्भ कहते थे। दूसरी बार माँ! आप जब अदिति हुईं और ये प्रजापति कश्यप हुए तो मैं आपका पुत्र बना। वामन देह होने से मुझे तब वामन कहते थे।'

'वत्स उपेन्द्र!' माता के अधरों पर वाक्य आया और उनका अञ्चल झरती दुग्धधारा से भीगने लगा।

'अब तीसरी बार मैं आपका पुत्र बनकर आया हूँ। मैं साधारण मर्त्य शिशु बनकर प्रकट होता तो आप दोनों पहिचान नहीं पाते कि आप मेरे जन्म-जन्म के माता-पिता हैं। आप तो नित्यमुक्त हैं। मुझे पुत्र मानकर और ब्रह्म मानकर भी आपका अन्तर मुझमें लगा रहेगा।! मेरा चिन्तन करते हुए आप मेरे धाम पधारेंगे अब यहाँ से।'

पिता वसुदेव जी तो अब तक चुपचाप सुन रहे थे। ये जन्म-जन्म के अपने आये भी तो केवल माता से ही बोलते जा रहे हैं? पिता की ओर देखोगे ही नहीं क्या? और उन सर्वेश्वर ने देखा वसुदेव जी की ओर- 'तात! माँ ने मुझे यह रूप छिपा लेने की आज्ञा दी है।'

'ठीक तो कहा है' वसुदेव जी बोले नहीं; किन्तु उनका हृदय बोल उठा- 'यह रूप भी क्या सबको अभी दिखलाने योग्य है और कंस.....।'

'आप कंस से भयभीत हैं तो मुझे गोकुल में नन्दराय जी के यहाँ अभी पहुँचा दें।' परमपुरुष ने कहा और जैसे स्वप्न का दृश्य बदलता है, दृश्य परिवर्तित हो गया। वह अकल्पनीय ज्योतिराशि, वह सर्वाभरणभूषित पीताम्बर परिधान, शंख, चक्र, गदाधारी चतुर्भुज सहसा अदृश्य हो गया।

वसुदेवजी चौंके। माता देवकी चौंकी और दूसरे ही क्षण देवकी जी ने अपने सम्मुख धरा पर पड़े सद्योजात इन्दीवर सुन्दर शिशु को ललक कर अंक में उठा लिया। वह तो माता के अंक में आने को उत्सुक दोनों कर एवं चरण भी उठाये माता की ओर ही देख रहा था। वसुदेव जी ने विमुग्ध नेत्रों से देखा और प्रत्येक बार के अभ्यास के कारण अधरों से निकला विष्वक्सेन! ●

मन मोहिनी मूरत

– प्रेमसिंह

मोहन तेरी मोहिनी मूरत, भेद काहु ना जाना।
अच्छे खासे ब्रज मण्डल को, कर दिया पागलखाना।।

गोपी भूली गोप जनों को, गोप भी रहे भुलाना।
सब कुछ भूला ये ब्रज मण्डल, मुरली की सुन ताना।।

आग उफनते दूध छोड़ दिया, छोड़ी गाय दुहाना।
आटा गूंदती गोपी दौड़ी, बच्चे माँगे खाना।।

खाली मटकी माथे धरी के पेड़ को यूं फरमाना।
दही लो, दही लो देर हो गई, जल्दी बाहर आना।।

दूसरी गूजरी दही ले निकली, ले लो कोई सुजाना।
दही को नाम बिसर गई गोपी, ले लो री कोई कान्हा।।

दुनिया के लिए पागल होकर रोते मैंने जाना।
प्रेम के सच्चे पागलपन को, मीरां ने पहचाना।। ●

गतांक से आगे

महायोगी श्री अरविन्द और महा कर्मयोगी पूज्य तनसिंह जी

– श्री अजीतसिंह धोलेरा

साहित्य सृजन :

बचपन से ही श्री अरविन्द को पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य साहित्य के पठन में रुचि थी। थोड़े बड़े हुए तो काव्य सृजन करने लगे। सत्रह साल की उम्र में ग्रीक से हेक्युषा का अंग्रेजी अनुवाद किया, जिसको पढ़कर सुविख्यात साहित्यकार लोरेन्स बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि–'एक अंग्रेज भी इतना अच्छा अनुवाद नहीं कर सकता। और लिखते जाओ।'

बड़ौदा आकर राज्य के कारोबार व अध्यापन से समय निकालकर श्री अरविन्द पठन व लेखन करने बैठ जाते थे। आपने अपना एक महाकाव्य 'प्रेम व मृत्यु' सतत् चौदह दिन तक लिखकर पूरा किया था। आपने सुप्रसिद्ध महाकाव्य 'सावित्री' का लेखन भी बड़ौदा में ही शुरू कर दिया था।

श्री अरविन्द ने संस्कृत भाषा सीख ली और वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, कालीदास, भर्तृहरि जैसे महा कवियों की संस्कत में लिखी कृतियों का पठन किया। भर्तृहरि के नीतिशतक का अंग्रेजी अनुवाद भी बेजोड़ है। उनके काव्य 'सोंग्स टु मर्टिना' पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए हैं। अपने सहयोगियों को, बंगाल के क्रान्तिवीरों को, अपनी पत्नी मृणालिनी को लिखे गये पत्र व 'वन्दे मातरम्' नाम के सामयिक में लिखे लेखों का पुस्तकों के रूप में प्रकाशन हुआ है।

पूज्य तनसिंह जी का साहित्य सृजन :

पूज्य तनसिंह जी ने श्री अरविन्द की तरह बहुत छोटी उम्र में लिखना शुरू कर दिया था। क्षत्रिय समाज की समस्याओं से पीड़ित पूज्य तनसिंह जी अपनी पीड़ा को लिखकर व्यक्त करते थे। उस समय प्रकाशित हो रही सामयिकों में आप श्री लेख भेजते थे। लेख छपते भी थे। लोग पढकर कहते थे कि 'बहुत उच्च व क्रांतिकारी विचार हैं। कौन है उनका लेखक?' और जब पता चलता कि यह तो माध्यमिक कक्षा में पढ़ रहे तनसिंह नाम के एक किशोर का पराक्रम है, तब पाठक को आश्चर्य होता था और कहता था– 'इतना छोटा बालक और इतने उच्च विचार।' उन्हीं लेखों से प्रभावित होकर श्रद्धेय श्री आयुवानसिंह जी पत्राचार से पूज्यश्री से मिलने लगे थे। किशोरावस्था आयी तो अपने सहयोगियों के बीच हस्तलिखित पत्रिका के माध्यम से विचारों का प्रसारण किया जाने लगा। बाद में 'संघर्ष' नामक पत्रिका प्रारम्भ की गई जो कुछ समय तक चली। सन् 1960 में संघशक्ति प्रारम्भ की गई जिसमें पूज्य श्री की रचनाएँ हर अंक में आती थी और बड़ी प्रेरणास्पद हुआ करती थी।

श्री अरविन्द की तरह पूज्यश्री भी बचपन से ही अपना चिन्तन काव्यों के माध्यम से व्यक्त करने लगे थे। 'झनकार' पुस्तक में गीत संकलित हुए हैं। ये गीत जिनको क्षत्रिय युवक संघ में सहगीत या सहगायन कहते हैं, वे संघ की शाखाओं में, संघ के प्रशिक्षण शिविरों में व संघ के अन्य कार्यक्रमों में गाये जाते हैं। इन गीतों के भाव को समझने के लिए शिविरों में चर्चा भी होती है, जिसको अर्थबोध का कार्यक्रम कहा जाता है।

इन काव्यों को पढ़कर एक सुविख्यात कवि ने कहा था कि–'यदि इन गीतों का कवि सम्मेलनों में पठन व गायन होता तो हिन्दी साहित्य जगत में पूज्य तनसिंह जी 'श्रेष्ठ उ.मिं कवि' के उपनाम से जाने जाते। भारतीय साहित्य अकादमी की ओर से पुरस्कार भी मिलते।

पूज्यश्री द्वारा विशिष्ट शैली में लिखी प्रेरक कहानियाँ 'बदलते दृश्य' व 'होनहार के खेल' पुस्तकों में संग्रहित हैं। जैसे एक व्यक्ति का चरित्र होता है, उसी तरह समाज का भी चरित्र होता है। 'समाज चरित्र' किताब में उसकी चर्चा मिलती है। समाज सेवा करते समय जो बाधाएँ आती हैं, उनका समाधान 'गीता और समाज सेवा' की प्रेरणा से मिलता है। 'साधक की समस्याएं' में एक साधक को झेलने पड़ती बाधाओं का विवरण किया गया है। और समाज को, साधकों को, शिक्षक के रूप में कार्य करते समय मार्ग में आती समस्याओं की चर्चा व समाधान 'शिक्षक की समस्याएँ' में निरूपित हैं।

पूज्यश्री ने अपनी आत्मकथा तो नहीं लिखी है मगर आप द्वारा लिखी गई चार पुस्तकें-'पंछी की राम कहानी', 'एक भिखारी की आत्मकथा', 'जेल जीवन के संस्मरण' व 'लापरवाह के संस्मरण' हैं, जिनमें आपकी ही जीवनी सम्बन्धित वर्णन है।

'साधना-पथ' आपश्री की आध्यात्मिक यात्रा का विवरण संजोये हुए है। उसके छोटे-छोटे अवतरणों में ज्ञान का पूरा सागर एक छोटी-सी गागर में समा दिया है। मेरा तो मानना है कि इस पुस्तिका को अगर सही स्थान पर पहुँचाया जाए तो नोबल पुरस्कार से सम्मानित होने जैसी है।

पूज्यश्री रोजाना डायरी लिखते थे। चयन किए हुए लेख 'डायरी' पुस्तक में संग्रहित किए गये हैं। आपश्री स्वयंसेवकों को सहयोगियों को पत्र लिखते रहते थे। उससे संघ परिवार को कार्य में मार्गदर्शन होता था और प्रेरणा मिलती थी। कुछ चयनित्र पत्रों का संकलन 'पत्र दर्पण' पुस्तक में किया गया है।

शास्त्रों का गहन अध्यधन व चिन्तन करके संघ के प्रशिक्षण शिविरों में 'बौद्धिक प्रवचन' के कार्यक्रम के लिए तैयार की हुई सामग्री संघ प्रवृति के लिए अनमोल खजाना है। उनमें समग्र मानव जीवन को सार्थक बनाने के रास्ते, रीति व साधन का अद्‌भुत विवरण मिलता है। प्रेरणादायी गीतों का संग्रह 'झनकार' पुस्तक में है। संघ के प्रशिक्षण शिविरों में पूज्यश्री के साहित्य तथा सहगीतों पर विस्तृत चर्चा होती है अतः हजारों लोग आपश्री के साहित्य से परिचित हैं और मार्गदर्शन हेतु सदुपयोग करते हैं। इसके अलावा 'संघशक्ति' पत्रिका में भी आपके मार्गदर्शक लेख प्रकाशित होते रहते थे। इन पुस्तकों में से अधिकतर का गुजराती में अनुवाद हुआ है तथा इन पुस्तकों के अनेक संस्करण मुद्रित हो चुके हैं और मुद्रित होते जा रहे हैं। गुजराती संस्करण के कारण गुजरात में चल रही संघप्रवृति को बहुत मूल्यवान सम्बल मिला है।

श्री अरविन्द का साहित्य बहुत ही उच्च स्तरीय होते हुए भी, श्री अरविन्द की साधना मर्यादित दायरे में ही होती थी और होती है, अतः वह साहित्य आज तक आम समाज तक पहुँच नहीं पाया है। श्री अरविन्द ने ज्यादातर लेखन अंग्रेजी में ही किया था। उसका बंगाली, हिन्दी, गुजराती आदि कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। फिर भी वह शुद्ध रूप से आध्यात्मिक-साधनागत होने से, तथा उस पर चर्चा भी खास लोगों में होती थी और होती है, इसलिए ज्यादातर लोग आज भी आपके साहित्य से अनभिज्ञ ही हैं।

साम्यवाद पर दोनों योगियों के चिन्तन में साम्यता

विश्व में जब साम्यवाद के पतन के बारे में कोई सोचता भी नहीं था, उस समय श्री अरविन्द ने उसके पतन के बारे में लिखा है कि- 'एक केन्द्रीय सत्ता के नीचे फौजी कठोर शासन वैयक्तिक स्वातन्त्र्य को नष्ट कर देना है। उसमें मानव-शिक्षा, आर्थिक जीवन, सामाजिक परम्परायें, नीति-नियम, ज्ञान, धर्म, मानवीय प्रवृति, सभी क्षेत्रों की दृढ और एक रूप व्यवस्था के लिए व्यक्तिगत और प्रादेशिक संस्थाओं पर अंकुश लग जाता है। फलस्वरूप लश्करी अनुशासन व स्वातंत्र्य के आदर्श बीच उग्र संघर्ष होता है।

श्री अरविन्द ने जैसा लिखा था, उसको सिद्ध करती

रशिया (रूस) जैसी साम्यवादी महासत्ता कई छोटे स्वतंत्र गणराज्यों में बंट गई। पोलैण्ड, पूर्व जर्मनी, झेकोस्लोवाकिया, रूमानिया, हंगरी जैसे राष्ट्र साम्यवाद के शासन से मुक्त हो गए। आज साम्यवादी चीन में भी वैयक्तिक स्वतंत्रता के लिए अभियान शुरू हो गये हैं।

पूज्य तनसिंह जी का भी साम्यवाद के बारे में ऐसा ही चिन्तन था। जब विश्व में साम्यवाद का इतना दबदबा था कि साम्यवाद के अन्त के बारे में चर्चा करना तो दूर, चिन्तन भी नहीं होता था, तब 1956 में प्रकाशित पूज्यश्री की पुस्तक 'समाज-चरित्र' में 'लेखक की ओर से' में साम्यवाद के विषय में लिखा है-

'साम्यवाद घृणा द्वारा जनमत निर्माण का बीजारोपण करता है, मगर घृणा मनुष्य का स्वाभाविक भोज्य न होने से मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ उसे घृणा से हटाकर निर्माण की ओर उन्मुख करती है। साम्यवाद इस निर्माण के लिए समाज के ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन के लिए प्रतीक्षा करने की सिफारिश करता है, मगर यहाँ आकर वह जगत के मनोविज्ञान को धोखा देने लग जाता है। यदि साम्यवाद का निर्माण कार्य उसके विध्वंस कार्य के साथ-साथ चलता रहे तो वह जिन लोगों में पनपेगा अकाट्य बनकर रहेगा और बाकी के लोगों के लिए वह धोखे की टट्टी नहीं रहेगी। क्या समाज और क्या व्यक्ति, शक्ति किसी की भी निष्क्रिय नहीं रह सकती। क्रियाशीलता उसका सहज गुण है। अतः जो शक्ति निर्माण होती है किन्तु पोषण नहीं प्राप्त करती, उसे उसका भोग्य नहीं मिलता तो वह शक्ति अपने आपका उसे अग्नि की भाँति क्षय कर देगी जो वस्तुओं को जलाकर स्वयं अपने आपको अन्त में खाकर समाप्त हो जाती है।'

पूज्यश्री ने ऐसे ही विचार 'साधक की समस्याएं' में प्रस्तुत किए हैं-

साम्यवादी देशों में राज्यशक्ति इतनी प्रबल बन जाती है कि उससे सामाजिक शक्ति निरर्थक और निर्बल बन जाती है। वहाँ व्यक्ति पर इतने अंकुश लग जाते हैं कि उससे मुक्त होने का उपाय भी ढूंढे नहीं मिलता। इस स्थिति को पूज्यश्री ने एक सहगान में व्यक्त करते गाया है-

हांक उठायी, वज्र गिराये, बने बनाये सभी मिटाये।
निर्दोषों के खून में रंग के, रंग-बिरंगे लाल रंगाये।
मानवता के मिट गये घेरे, ऐसे आए लाल सवेरे।।

साम्यवादी सत्ता ने गरज-गरज कर वज्र गिराये, अर्थात् भयंकर नर संहार किया। रूस के तत्कालीन साम्यवादी प्रमुख स्टालिन ने हजारों को खत्म कर दिया। राजा झार के हजारों पक्षकारों को खोज-खोज कर कत्लेआम किया था। बने बनाये सभी मिटाये। राजाशाही के सभी चिह्न-भवन, पाठशालाएँ, स्मारक, बाग-बगीचे, अस्पतालें, क्रीड़ांगन, साहित्य, कला-नाट्य गृह, संगीत आदि जो कुछ था, उस सबको मिटा दिया गया। उखाड़ कर फेंक दिया गया। मान लें के राजशाही में कुछ बुरा होगा, मगर अच्छा भी होता ही है। मगर साम्यवादी तानाशाही ने अच्छा-बुरा, सभी का विध्वंस कर दिया।

निर्दोषों के खून में रंग के- साम्यवादी सत्ता ने जिन लोगों की (कत्ल) की थी, वे तो निर्दोष थे। उनका अपराध केवल इतना ही था कि वे राजा झार के समय के थे। ऐसे निरपराधियों के खून से रंग के- 'रंग बिरंगे लाल रंगाये।' लाल रंग साम्यवाद का द्योतक है। अर्थात् साम्यवादी विचारधारा के अलावा सभी मत मतांतर को नष्ट कर दिया। सबको साम्यवादी सत्ता के नीचे लाया गया। ऐसे क्रूर कर्मियों के अत्याचार से 'मानवता के मिट गये घेरे।' रूसी प्रजा के कई कबीले, संगठन, शिक्षा प्रणाली, कला, साहित्य, शिल्प, सबका विनाश कर दिया। अतः पूज्यश्री ने लिखा- 'ऐसे आए लाल सवेरे' रूस में ऐसा साम्यवादी नृशंष शासन स्थापित हो गया था।

●

स्वार्थ रहित सेवा की महिमा

– जयदयाल जी गोयन्दका

भगवान् का भजन, मन-इन्द्रियों का संयम, स्वाध्याय- इनको करना चाहिये। यह बहुत ही अच्छी तथा सिद्धान्त की बात है। स्वार्थ के त्याग की बात तो जितनी कही जाय, उतनी ही थोड़ी है। निष्काम-प्रेमभाव से सेवा की जाय तो उसके समान कोई सेवा है ही नहीं। त्याग से भगवान् की प्राप्ति हो जाती है। चित्त में प्रसन्नता होती है। चित्त का सुधार होकर उद्धार हो जाता है। यह बात विशेष मूल्यवान् बतायी गयी है। शास्त्रों में भी यही बात जगह-जगह मिलती है-

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।।

(गीता 12/12)

मर्म को न जानकर किये हुए अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से मुझ परमेश्वर के स्वरूप का ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से भी सब कर्मों के फल का त्याग श्रेष्ठ है; क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।

शरीर के द्वारा कोई भी क्रिया हो, सभी स्वार्थरहित होनी चाहिये। सभी स्वार्थरहित हों तो विशेष मूल्यवान् है। हम कोई भी काम करते हैं, उसमें यह देखते हैं कि इस काम के करने से मुझे क्या लाभ होगा। प्रत्येक काम में लाभ सोचते हैं, यही तो स्वार्थ है। यह बात तो सारे संसार में है ही, अब इसकी क्या आवश्यकता है? हमें तो अपने में कोई विशेष बात रखनी चाहिये। प्रत्येक क्रिया में यह भाव होना चाहिये कि इस काम से दूसरों को क्या लाभ मिलेगा। इस काम से मेरे द्वारा दूसरों की क्या सेवा होगी। सारे संसार की सेवा करने की चेष्टा करनी चाहिये। जैसे कोई लोभी आदमी यह सोचता रहता है कि इस काम से रुपये कैसे मिलें। ऐसे ही हमें सेवा के उपायों की खोज करनी चाहिये। एक तो होती है सेवा, दूसरी होती है परम सेवा। शरीर के उपकार को सेवा कहते हैं और आत्मा के उद्धार का नाम है परम सेवा। आत्मा के उद्धार के लिये विशेष चेष्टा करनी चाहिये। शरीर की भी निष्काम भाव से सेवा करने से सेवा करने वाले का कल्याण हो जाता है। अपंग, अनाथ, दुःखी, वृद्ध सभी पूजा के योग्य हैं, इनकी सेवा करनी चाहिये। बड़े चाव से और निष्कामभाव से सेवा करनी चाहिये। ऐसी सेवा करने वाला सात्त्विक त्यागी होता है।

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते।।

(गीता 18/26)

जो कर्ता आसक्ति से रहित अनासक्त होकर अहंकार से अलग हुआ, धृति (धैर्य) और उत्साह से युक्त हुआ, सिद्धि-असिद्धि में निर्विकार है, वह सात्त्विक कर्ता कहा गया है। जैसे किसी के लड़के का विवाह हो तो उसके मन में उत्साह होता है स्वार्थ से, परमार्थ में तो इससे भी अधिक उत्साह एवं आनन्द आना चाहिये। मान-बड़ाई के लिये कर्म नहीं करना चाहिये। ऐश-आराम को त्याग कर प्रत्येक काम करना चाहिये।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।

(गीता 12/12)

ध्यान से भी सब कर्मों के फल का त्याग श्रेष्ठ है; क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।

प्रश्न– कोई उदाहरण देकर समझाइये कि इस प्रकार सेवा करनी चाहिये।

उत्तर– कुन्ती की सेवा सराहनीय तथा अनुकरण करने के लायक है। कुन्ती की बातें तो बड़ी ही प्रसिद्ध हैं।

एक समय पाण्डव एक चक्रा नगरी में रहा करते थे। वहाँ के राजा ने एक राक्षस के साथ, जो वहाँ रहता था, इकरार कर रखा था कि तुम्हारे पास रोज एक आदमी, एक भैंसा और एक गाड़ी उड़द आदि आ जाया करेगा। यदि राजा यह सब नहीं देता तो वह राक्षस नगर में आकर नगर

को नष्ट-भ्रष्ट कर देता। सब घरों की बारी बँधी हुई थी। बारह वर्ष के बाद उस घरकी बारी आयी, जिसमें कुन्ती रहती थी। सायंकाल घरवाले विचार करने लगे कि कल कौन जायगा। घर का मालिक कहता कि मैं जाऊँगा! स्त्री कहती कि मैं जाऊँगी, मेरा कर्तव्य है कि मैं पति के प्राण बचाने के लिये अपने प्राणों को त्याग दूँ। पति ने कहा-तुम्हारा कहना ठीक है, किंतु बाल-बच्चों की सँभाल कौन करेगा? स्त्री ने दलील दिया-आपके जाने के बाद कमाकर कौन लायेगा? मेरे जीते आपका मरना मैं कैसे बर्दाश्त करूँगी? बारह वर्ष की एक लड़की थी। उसने कहा कि माता-पिता के बिना तो काम नहीं चलेगा। मैं पुत्री हूँ, नरक से जो तारे वह पुत्री होती है, पु=नरक, त्री=जो तारे। अभी आपका उद्धार करूँगी तो मेरा कर्तव्यपालन हो जायगा। विवाह तो मेरा करना ही है, आप राक्षस के साथ मेरा विवाह कर दें। पिता ने कहा कि विवाह से तो स्वर्ग मिलेगा, किंतु राक्षस की भेंट से तो नरक का ही भागी होना पड़ेगा। तुम्हें हम कैसे भेज सकते हैं? पहले तो बारह साल पूर्व एक जवान लड़का था, उसे भेज दिया, अब तुम्हें भी कैसे भेजें? इतनेमें उसके तीन सालके लड़केने छड़ी लेकर कहा कि मैं उसे मार डालूँगा। वह लड़का राक्षस को नहीं जानता था। सब हँसे।

कुन्ती सुन रही थी। मौका पाकर उसने प्रवेश किया तथा पूछा-रातभर आप लोग बातचीत करते रहे, आपको नींद नहीं आयी, क्या आफत है? तब उन लोगों ने कहा-देवि! हम पर जो विपत्ति आयी है, उसमें सहायता करना मानवीय शक्ति के बाहर है। कुन्ती के ज्यादा आग्रह करने पर कि हमारा कर्तव्य है कि हम आपके सुख में भाग लेते हैं तो हमें दुःख में भी भाग लेना चाहिये। ब्राह्मण देवता ने कहा-आफत यह है कि यहाँ का राजा मूर्ख है। उसने राक्षस के साथ इकरार कर रखा है कि रोज एक आदमी, एक भैंसा और एक गाड़ी अन्न तुम्हारे पास आ जाया करेगा। सारे गाँव की बारी बँधी हुई है। बारह वर्ष में प्रत्येक परिवार की बारी आती है। कल की हमारी बारी है, अतः हम विलाप कर रहे हैं।

कुन्तीने कहा-ठीक है! तुम्हारा जाना तो बन ही नहीं सकता। मेरे पाँच पुत्र हैं, मैं किसी को भेज दूँगी। मेरे पर यह बात छोड़ दो। सिपाही आये तो मेरे पास भेज देना। एक को एक प्यारा होता है, जिसके पाँच हों, उसे पाँचों ही प्यारे लगते हैं। घरवालों ने कहा-हम अपने बलिदान में दूसरों को कैसे भेज सकते हैं? किंतु कुन्ती के आश्वासन देने पर वे चुप हो गये। कुन्ती ने भीमसेन को बुलाकर कहा कि बेटा! राक्षस को भेंट देनी है। एक राक्षस है, वह रोज एक व्यक्ति को खाता है, अतः आज तू चला जा। यह सुनते ही भीम प्रसन्न हो गये। युधिष्ठिर आये, उन्होंने सुना कि भीम को राक्षस के पास भेजा जा रहा है तो बोले, माताजी! आपकी बुद्धि कहाँ घास चरने गयी है? भीम से तो हम राज्य के वापस मिलने की आशा करते हैं। इसको छोड़कर हम चारों में से किसी को भेज दो। तब कुन्ती ने कहा-तुम नहीं जानते हो, इसका शरीर बड़ा पक्का है, इसको कोई भी नहीं मार सकता। बचपन में एक बार यह मेरे से छूट गया था, नीचे सिल पड़ी थी, उसपर गिरा तो वह चूर-चूर हो गयी। तुम्हारे में से यदि मैं किसी को भेज दूँगी तो मुझे यह आशा नहीं कि तुम लोग वापस आ जाओगे। फलतः मैं एक पुत्र से विहीन हो जाऊँगी। अतः मैं भीमसेन को भेजती हूँ।

उड़द गाड़ी में भर कर भीम ले गये। राक्षस के आने में देर हो गयी। भीमसेन की खुराक तेज थी। पहले भी जो कुछ पाण्डव लेते थे, आधा भीम खाते और आधे में से अन्य सभी बाँट लेते थे। भीमसेन उड़द खाने लगे। राक्षस ने दूरसे कहा-यह कौन है? कहाँ से आया है? खड़ा रह, क्या कर रहा है? कोई भी जवाब नहीं दिया भीमसेन ने। भीमसेन को उसने मुक्का मारा। किंतु उसे ऐसा मालूम हुआ कि किसी पत्थर पर मुक्का मारा हो। भीमसेन खाते ही रहे। खा चुकने के बाद राक्षस ने पूछा, क्यों रे तू तो मेरा भोजन खाता है! तब भीम ने कहा तू रोज आदमियों को मारता

है, आज मैं तुझे मारने आया हूँ। भयंकर युद्ध हुआ। उस स्थान के सभी पेड़ उखाड़ लिये। अन्त में भीमसेन ने उसे मार डाला और लाकर नगर के दरवाजे के आगे रख दिया। सुबह हुई, मरे हुए को सभी मारने लगे। सबने कहा–मैंने मारा है, मैंने मारा है। उनका निर्णय करना कठिन हो गया। तब फिर वे जिसकी बारी थी उस ब्राह्मण के घर गये। भीम से उन लोगों ने पूछा–क्या तुमने मारा है? भीम ने कहा–हाँ मारा है। इनाम देने लगे तो उन्होंने कहा–इनाम की कोई भी आवश्यकता नहीं है। फिर माता से कहा कि माताजी अब यहाँ नहीं ठहरना चाहिये। वे आगे बढ़ गये।

इन सबसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। कितना त्याग है! कुन्ती अपने पुत्र को बलिवेदी पर चढ़ाने को तैयार है। वह कहती है–सुख में हम बराबर साथ रहते हैं तो दुःख में भी साथ रहना चाहिये। वह कर्तव्य समझकर भेज रही है। कितना त्याग है! ब्राह्मण बलिदान के लिये अपने–आपको देने को तैयार है। स्त्री कहती है कि अपने प्राणों को देकर पति का प्राण बचाना मेरा कर्तव्य है। दोनों का त्याग देखो। लड़की कहती है, माता–पिता का प्राण बचाना मेरा कर्तव्य है। कुन्ती का त्याग देखो। युधिष्ठिर को देखो, हमें क्यों नहीं भेज दिया? किसी को देखो कितना त्याग है? मामूली त्याग नहीं, प्राणों की बात है।

आज कोई सरकार विज्ञप्ति निकाले कि लड़ाई होने वाली है, हर एक घर से एक–एक आदमी को देवें तो कैसा विचार होगा? लड़के कहेंगे, पिताजी! आप बूढ़े हो गये हैं, आप चले जायें। पिता कहेगा कि तुम लोग चार भाई हो, कोई एक चला जाय तो बड़ा कहेगा कि कौन कमायेगा। अन्त में यही होगा कि वह राक्षस सबको खा जायगा।

त्याग से सब प्रकार से लाभ ही है। स्वयं यदि त्याग करेगा तो दूसरों पर भी प्रभाव पड़ेगा। हर एक काम में त्याग–ही–त्याग दीखना चाहिये। जो त्याग का व्यवहार करता है, वह तो एक प्रकार से सबको त्याग की बात सिखाता है। क्रियात्मक शिक्षा उपदेश की अपेक्षा उत्तम है। कहने से उतना असर नहीं पड़ता, जितना क्रिया करने से असर पड़ता है। मैं पालन नहीं करता हूँ, मैं कहूँ कि माता–पिता की सेवा करनी चाहिये। मेरे द्वारा माता–पिता की कोई विशेष सेवा नहीं हुई तो लोगों को कम ही लाभ होता है। मैं पालन करूँगा, उसका ही असर होगा। मैं निरन्तर भजन–ध्यान के लिये कहता हूँ, किंतु यदि मैं स्वयं भजन नहीं करूँगा तो असर कैसे पड़ेगा? मैं भजन–ध्यान करूँ तो लोग कहेंगे कि यह भजन करता है, अपने भी भजन ही करो; अन्यथा इनसे ज्यादा तो अपने ही करते हैं, ऐसा कहेंगे। जिस विषय में मैं कहता हूँ, उसका पालन करूँ तो मेरा कहने का अधिकार है। यदि मेरे में स्वार्थ की बात है तो किसी भी प्रकार असर नहीं पड़ेगा। भगवान् से प्रेम करने वाला ही प्रेम की शिक्षा देगा। वेश्या प्रेम की शिक्षा नहीं दे सकती। वेश्या का क्या असर होगा? जो आदमी जो व्याख्यान देता है, उसे उसमें निपुण होना चाहिये। अनुष्ठान स्वयं करना चाहिये, तभी कहने का अधिकार होता है। यह बहुत अच्छा उदाहरण आपके सामने रखा। केवल स्वार्थ–त्याग के भाव से ही आत्मा का कल्याण हो जाता है। काम पड़ने पर त्याग करने की चेष्टा करनी चाहिये।

ख्याल करना चाहिये, कुन्ती उच्च कोटि की स्त्री थी। धृतराष्ट्र और गान्धारी जब तपस्या के लिये वन में जाने लगे तो कुन्ती ने कहा–ये मेरे जेठ–जेठानी हैं। जब इन्होंने वन में जाने का निश्चय किया है तो मैं भी साथ जाऊँगी। उसने कहा–मेरे जेठ ससुर एवं जेठानी सासके समान हैं। धृतराष्ट्र के कारण गान्धारी आँखों पर पट्टी रखती हैं। दोनों अन्धे के समान हैं। वे तपस्या करेंगे, मैं उनकी सेवा करूँगी, तपस्या करूँगी। जैसा कहा वैसा ही किया।

यहाँ यह ध्यान देना चाहिये कि कुन्ती के साथ उन्होंने कैसा व्यवहार किया था। धृतराष्ट्र के पुत्रों ने भीम को विष खिलाकर गङ्गा में डाल दिया। कुन्ती को मालूम हो गया। विदुरजी ने कहा यह सब काम दुर्योधन का ही है, गम खाना चाहिये। चुप रहने में ही लाभ है। भीम जब वापस आये तो उन्होंने कहा कि मालूम होता है कि दुर्योधन

ने गङ्गा में बहा दिया होगा। जब मैं नीचे पाताल में गया, तब वहाँ मेरी मुलाकात एक नागकन्या से हुई। मैं मृतप्राय था। नागकन्या की यह प्रतिज्ञा थी कि जिसको मैं देखूँगी उसी के साथ मेरा विवाह होगा। तब उसके पिता ने नागों को बुलाकर मेरा विष उतार दिया। अपने साथ बुराई करने वाले के साथ भी भलाई ही करनी चाहिये। इतना होने पर भी कुन्ती ने दुर्योधन के पिता की सेवा की। जब कुन्ती वन में जा रही थी, तब द्रौपदी और सत्यभामा ने कहा कि हमारे में से किसी को भेज दें, आप न जायें, किंतु कुन्ती ने कहा– मैं सेवा करूँगी। आजीवन सेवा कर उन्हीं के साथ कुन्ती ने अपने प्राण गँवाये।

कुन्ती ने कैसा व्यवहार किया, विचार करना चाहिये। कोई बुराई करे तो उसके साथ भी भलाई ही करनी चाहिये। कुन्ती की तरह करनेपर ही प्रभाव पड़ सकता है। युधिष्ठिर ने भी ऐसा ही किया। जो उनको मारने आये, उनको भी अपने भाइयों को भेजकर छुड़वाया। जो मारने के लिये आया, उसके साथ ऐसा व्यवहार किया। क्या कोई दूसरा ऐसा व्यवहार कर सकता है? जिसमें धर्मवीरता है, उसे कौन मार सकता है? उनके धर्म का बड़ा ही प्रभाव था। बुराई करने वाले के साथ भलाई करना एक नम्बर है। यही स्वार्थ का त्याग है। इस प्रकार स्वरूप से तथा हृदय से भी त्याग करना चाहिये। फलका त्याग ही त्याग का त्याग है, निष्कामभाव से त्याग करने मात्र से ही परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। इस प्रकार कुन्ती की तरह अपने जीवन को बिताना चाहिये। कुन्ती का प्रसंग संक्षेप से बताया है। निष्कामभाव से कर्म करना चाहिये। फल की इच्छा तथा अहंवादी नहीं होना चाहिये। सेवा करनी चाहिये, फलेच्छा नहीं करनी चाहिये। जो दुःख दे, उसके साथ तो विशेष उपकार करना चाहिये। इसका बड़ा असर पड़ता है। शत्रु भी साधु (मित्र) हो जाता है। भाव बदल जाता है। आत्मा को पवित्र बना देता है। पवित्र बनाने से बढ़कर और क्या हो सकता है। यह परम सेवा है। शरीर की सेवा तो सेवा है, आत्मा का कल्याण होना ही परम सेवा है। शरीर की सेवा से ही उद्धार हो जाय तो फिर निष्कामभाव से परम सेवा से उद्धार होने में शंका ही क्या है? जैसे रुपयों का लोभी जिस किसी प्रकार से रुपया मिले–ऐसी चेष्टा रखता है, उसी प्रकार किस तरह सेवा का अवसर मिले– यह भाव रखना चाहिये। यह भाव उच्चकोटि का है। शूद्र के लिये वेदव्यास जी ने 'धन्य है, धन्य है'– ऐसी घोषणा की है। यदि सेवा का अवसर मिल जाय तो अपना अहोभाग्य समझना चाहिये।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।

(गीता 18/46)

जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

सबको ईश्वर मानकर सेवा करने से मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है। सबको नारायण का स्वरूप मानकर सेवा की जाय तो वह सेवा उच्चकोटि की सेवा हो जाती है तथा परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है।

साक्षात् भगवान् मानकर वटवृक्ष में पानी देना चाहिये। भगवान् वटरूपमें पान कर रहे हैं। सब कुछ भगवान् का ही रूप समझकर, इनकी सेवा भगवान् की सेवा मानकर बड़े उत्साह से करनी चाहिये।

सबको भगवान् मानकर हाथ जोड़ना चाहिये। हो सके तो हर प्रकार से सबको सुख पहुँचाकर कृतकृत्य होना चाहिये। हे प्रभो! हमें नीचेसे नीचा बनाओ, भगवान् से ऐसी प्रार्थना करनी चाहिये। जो सबसे नीचा होकर रहता है, वही अन्त में ऊँचा उठता है, यह अटल सिद्धान्त है। जो अपने को ऊँचा या बढ़कर मानता है, उसका पतन होता है। जो अपने को चरणों की धूल मानता है, वह ऊँचा उठता है। अतः सबके चरणों की धूल होकर ही रहना चाहिये। ऐसा करने वाला तुरंत ही भगवान् की प्राप्ति कर लेता है। यह बात भगवान् ने गीता में भी कही है। ●

<u>पौराणिक कथा :</u>

सोमनाथ

– नन्द किशोर 'योगी'

दक्ष प्रजापति की सत्ताईस कन्याएँ थीं। उन सभी का विवाह चन्द्र देवता के साथ हुआ था। किन्तु चन्द्रमा का समस्त अनुराग उनमें एक केवल रोहिणी के प्रति ही रहता था। उनके इस कार्य से दक्ष प्रजापति की अन्य कन्याओं को बहुत कष्ट रहता था। उन्होंने अपनी यह व्यथा-कथा अपने पिता को सुनायी। दक्ष प्रजापति ने इसके लिये चन्द्रदेव को बहुत प्रकार से समझाया। किन्तु रोहिणी के वशीभूत उनके हृदय पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अन्ततः दक्ष ने क्रुद्ध होकर उन्हें 'क्षयी' हो जाने का श्राप दे दिया। इस श्राप के कारण चन्द्रदेव तत्काल क्षयग्रस्त हो गये। उनके क्षयग्रस्त होते ही पृथ्वी पर सुधा-शीतलता-वर्षण का उनका सारा कार्य रुक गया। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गयी। चन्द्रमा भी बहुत दुःखी और चिन्तित थे। उनकी प्रार्थना सुनकर इन्द्र आदि देवता तथा वशिष्ठ आदि ऋषिगण उनके उद्धार के लिये पितामह ब्रह्माजी के पास गये। सारी बातों को सुनकर ब्रह्माजी ने कहा- 'चन्द्रमा अपने श्राप-विमोचन के लिये अन्य देवों के साथ पवित्र प्रभास क्षेत्र में जाकर मृत्युञ्जय भगवान् की आराधना करें। उनकी कृपा से अवश्य ही इनका श्राप नष्ट हो जायेगा और ये रोगमुक्त हो जायेंगे।'

उनके कथनानुसार चन्द्रदेव ने मृत्युञ्जय भगवान् की आराधना का सारा कार्य पूरा किया। उन्होंने घोर तपस्या करते हुए दस करोड़ मृत्युञ्जय मन्त्र का जप किया। इससे प्रसन्न होकर मृत्युञ्जय- भगवान् शिव ने उन्हें अमरत्व का वर प्रदान किया। उन्होंने कहा- चन्द्रदेव! तुम शोक न करो। मेरे वर से तुम्हारा श्राप-मोचन तो होगा ही, साथ-ही-साथ प्रजापति दक्ष के वचनों की रक्षा भी हो जायेगी। कृष्ण पक्ष में प्रतिदिन तुम्हारी एक-एक कला क्षीण होगी, किन्तु पुनः शुक्ल पक्ष में उसी क्रम से तुम्हारी एक-एक कला बढ़ जाया करेगी। इस प्रकार प्रत्येक पूर्णिमा को तुम्हें पूर्ण चन्द्रत्व प्राप्त होता रहेगा। चन्द्रमा को मिलने वाले इस वरदान से सारे लोकों के प्राणी प्रसन्न हो उठे। सुधाकर चन्द्रदेव पुनः दसों दिशाओं में सुधा-वर्षण का कार्य पूर्ववत करने लगे।

श्रापमुक्त होकर चन्द्रदेव ने अन्य देवताओं के साथ मिलकर मृत्युञ्जय भगवान् से प्रार्थना की कि आप माता पार्वती जी के साथ सदा के लिये प्राणियों के उद्धारार्थ यहाँ निवास करें। भगवान् शिव उनकी इस प्रार्थना को स्वीकार करके ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में माता पार्वती जी के साथ तभी से यहाँ रहने लगे।

पौराणिक कथा और मानव जीवन में कथा का स्वरूप

मानवीय विकास के क्रम में आदि मानव से आज तक मानव ने अपने भीतर अनन्त परिवर्तनों को देखा है, महसूस किया है। विभिन्न कालों में साधक शक्तियों ने साधनारत रहते हुये बहुत से सत्यों को जाना, प्रकृति की रचना को देखा, समझा।

साथ ही अपने भीतर ऊर्जाओं के एक असीम संसार को देखा और जाना कि किस प्रकार उसके मध्य उष्ण और शांत उर्जाएं गति करती हैं साथ ही उसने प्रकृति में व्याप्त ऋतु चक्र को भी देखा, महसूस किया तथा उनके प्रकृति में पड़ने वाले प्रभावों को जाना कि किस प्रकार तीव्र उष्णता (गर्मी) से सभी कुछ सूख जाता है, जल वाष्पिकृत होता है, फल, फसलें पकती हैं, जीव जन्तु किस प्रकार एक सम ऋतु में प्रजनन करते हैं, किस प्रकार शीत और उष्ण के मध्य वर्षा आती है, पेड़ों पर नये फूल लगते हैं, फल आते हैं इस प्रकार यह जाना कि प्रकृति में स्वतः ही घटित इन उष्ण व शीत के प्रभाव से प्रकृति किस प्रकार अस्तित्ववान होती है, जन्म लेती है, विस्तार पाती है और अंत को प्राप्त हो जाती है। जीव, वनस्पति, पशु, पक्षी सभी संसार की प्रजातियों में

ऋतु प्रभाव से शीत और उष्ण से सृजन विस्तार और अंत को देखा।

मनुष्य बौद्धिक क्षमता के विशेष गुण के कारण प्रकृति में एक विशेष स्थान बना पाया। अपनी दृष्टि व बौद्धिक ज्ञान से प्रकृति में व्याप्त इन परिवर्तनों को उसने अपने मध्य भी देखा और अपने मध्य भी उसने शीत-उष्ण के इस संसार को जाना-पहचाना और दोनों के अनुपातिक मिश्रण से अपने भीतर अनेक अवस्थाओं को जाना। आनन्द, पीड़ा, मुक्तता, शीतलता, उष्णता और उन्हें विभिन्न शब्द रूपी पहचान प्रदान की- आत्मा, शक्ति, चेतना, बुद्धि, प्राण, मन, शरीर, इन्द्रिय और इनमें गहरे जाने पर और स्पष्टता को प्राप्त करता गया।

अपने भीतर के गहन मौन में उसने भावों को प्रकटते देखा, कल्पनाओं को जन्म लेते देखा, उन्हें पूरा करने के लिये भीतर से एक विशेष शक्ति को बहते देखा, एक सी अवस्थाओं में रहने के कारण उनसे मुक्त होने की उस अवस्था को देखा और जाना कि ये किस प्रकार इस भावनाओं के वेग को थामती है। इस प्रकार उसने जन्म, पौषण, विस्तार और अंत को अपने ही भीतर लगातार बनते बिगड़ते देखा और इस प्रकार उसने उन अवस्थाओं की साधना प्रारम्भ किया जो क्षय को प्राप्त करती है, एक बल को बढाती है, आनन्द की अवस्था को प्रदान करती हैं। एक शांत और शीतल अवस्था को जाना। अपने ही भीतर उसने जाना कि केवल वो शरीर ही नहीं है, पीड़ा के एहसास को जाना और उसने ये भी देखा शरीर स्वस्थ है फिर भी अपने भीतर एक छटपटाहट को देखा, निराशा को जाना, आशा को जाना उसने जाना कि शरीर के परे भी कुछ है जो आहत होता है, बढती उष्णता से वो तिलमिला जाता है और बढते मौन व शांत अवस्था से कैसे अपने भीतर ही सिमट जाता है और देह के पालन के कार्य से भी वो विश्राम ले लेता है, किस प्रकार वो शरीर की आवश्यकताओं को भी अनदेखा करता है। उस अवस्था को उसने आलस्य और प्रमाद कह कर सम्बोधित किया। पुनः उसने अपने आप को वापस कर्मों में लगते देखा, जाना वो क्या है जो उसे पुनः उन थकित अवस्थाओं से वापस कर्म करने की ओर प्रेरित करता है उस शक्ति को ही उसने अनेक नामों से सम्बोधित किया। उत्साह के बहते इस बहाव को उसने परमात्मा कहा, आत्मा कहा, होश कहा, जागृति कहा। उस बल को जाना जो पुनः कर्म में उसे रत करता है उसको उसने शक्ति कहा। शरीर के भीतर की राजसिकता को जो संभालते हैं उन्हें दक्ष प्रजापति कहा।

जो बली होता है और निर्बल हो जाता है, जो कभी आनन्द से ओत प्रोत होता है और कभी गहन निराशा को प्राप्त करता है उसे ही 'मन' कहा। प्रकृति को बाहर और अपने भीतर समान रूप से गति करता देख मानव उसे इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त स्वरूपों से मिलाने लगा और इस प्रकार उसने अपने 'मन' को चन्द्रमा के समान पाया और उसे 'चन्द्रमा' कहा।

अथक परिश्रम व पूर्ण होशवान रहते हुये मनुष्य ने बाहर और अपने भीतर की इस समानता को साधक बन कर जाना और उन्हें ही हमने ऋषि, महर्षि, साधक आदि अनन्त नामों से पुकारा उन साधकों की आपस में तत्व ज्ञान चर्चा ही उपनिषद् कहलाये। उसी ज्ञान में कहा गया कि 'चन्द्रमा मनसो जातः'।

चन्द्रमा रूपी अपने 'मन' को जाना जो शान्त, शीतल, सहज, आनन्दित अवस्था में कैसे वासंती पुष्प की भांति खिला रहता है कैसे अपनी सुगन्ध से शरीर में वास करने वाली सभी शक्तियों, प्राणों, बुद्धि, देव शक्तियों, सात्विक स्वभाव की ओर गति करने वाली उन ऋषि शक्तियों को आनन्द प्रदान कर कर्मरत रखता है।

राजसिक शक्तियों में वास कर के जो सृजन के नवीन प्रभात में आनन्द प्राप्त कर सजती, संवरती है। नाना प्रकार के श्रृंगार को धारण करती है अपने रूप-लावण्य से जीव के मध्य इस जीवन के प्रति एक अनुराग जन्माती है।

साथ ही 'मन' तामसिक शक्तियों के कर्म का कारण

भी बना। जो रूग्ण, जर्जर व क्षीण हुयी शरीर की इस संरचना से व बाहर प्रकृति में व्याप्त क्षयी, फलहीन हुयी अवस्थाओं के विनाश के द्वारा, पुनः एक नये सृजन का पथ निर्मित करती है।

साथ ही हमें रक्षित होने का एक पाठ भी पढ़ाती है जिससे हम पंच तत्त्वों में व्याप्त उनके गुणों का एक-दूसरे के साथ मिश्रण करके उस दुर्लभ संरचना को रच सकें।

सर्वप्रथम तामसिक गुणधारक शक्तियों ने उन तत्त्वों को देखा, उन्हें प्रयोग किया, उसे हमने विध्वंस कहकर सम्बोधित किया। लेकिन उसके मध्य छुपे उस ज्ञान को कालांतर में मानव ने खोज निकाला, विध्वंसकारी उन तत्त्वों से सृजन के पुष्पों को खिलते देखा, विकास रूपी उस सृजन को देखा जो पहाड़ों में सुरंग, जमीन के नीचे खनन, बांध, पुल निर्माण में सहायक बने, उन पदार्थों को प्राप्त किया जो एक विस्फोट के पश्चात् चहुं ओर फैले। विद्युत जैसी असीम शक्ति, पैट्रोलियम पदार्थों में बहती असीम ऊर्जा, अणु, परमाणु में व्याप्त नाभकीय असीम क्षमता को मन ने उन तामसिक शक्तियों में वास करके मानव के विकास और आनन्द-वास हेतु प्राप्त किया।

अपने स्वभाव की इस विशेष अवस्था को ही उसने 'योगी' कहा जो निरन्तर आत्मा-शक्ति अर्थात् शीत-उष्ण के मध्य होशवान हो गति करता है और अपनी इस यात्रा में वो जो देखता महसूस करता है उसे अपने ही भीतर बुद्धि के स्वरूप में संचित करता है।

मन की यह रमण करने की स्वाभाविक प्रवृति ही चन्द्र की घटती बढती कला के स्वरूप में मानव ने अपने मन के मध्य जानी। दक्ष ने सांसारिकता को पोषित करने वाली अपनी शक्ति रूपी पुत्रियां चन्द्र को प्रदान की।

चन्द्र रूपी मन का एक ही शक्ति में वास करना, उसमें रमण करना, तथा अन्य की उपेक्षा करना ही उन दक्ष प्रजापति की पुत्रियों की पीड़ा का कारण बना। इस देह की सांसारिकता को पालन करने वाले दक्ष ने, चन्द्र रूपी मन के एक ओर वास करने, रमण करने को एक असंतुलन के स्वरूप में देखा। चन्द्र रूपी 'मानव मन' को विशेष एक गुण से बंधने को मना किया, मन के आनन्द की ओर गति करने के स्वभाव को जानने के कारण उसे श्राप दिया कि 'क्षयी हो जाओ!' उसे सम्पूर्ण प्रकृति रूपी शक्ति को सौंपा और घोर उष्णता के प्रभाव से चन्द्ररूपी मन काला हो गया।

चन्द्र रूपी मन की इस अवस्था का प्रभाव सम्पूर्ण देह में वास करने वाली शक्तियों पर भी पड़ा और उन्होंने चन्द्ररूपी मन को आत्मा रूपी शिव से युक्त होने का मार्ग सुझाया।

चन्द्ररूपी मन का शिव रूपी आत्मा की ओर गति करना मृत्युञ्जय शिव की आराधना के स्वरूप में जाना। मनुष्य ने अपने ही भीतर शिव रूपी आत्मा को मौन में जाना। प्रेम, विवेक आदि में उसे गतिशील होते देखा और उस सत्य को जाना जो शून्य, शान्त और शीतल है। यह भी जाना कि तीनों गुण सात्विक (सृजन), राजसिक (पालन-पोषण), तामसिक (संहार) उसके अस्तित्वान रहने के लिये समान रूप से आवश्यक है। और यह भी जाना कि शरीर रूपी संसार में वास करने के लिये तीनों गुणों का समान रूप से जीव के मध्य होना आवश्यक हैं। एक गुण देह में भोजन की आवश्यकता बनाता है तो दूसरा उस भोजन को पचाता है तो तीसरा गुण उस पचे हुये भोजन स्वरूप मल को देह से बाहर निकालता है और मणिपुर (राजसिकता) में फैली हुयी प्रजापति की ये कन्यायें ही क्रमशः चन्द्ररूपी मन का साथ पाकर इस देह में व्याप्त सांसारिकता को पुष्ट और गतिमान रखती हैं।

अमावस से पूर्णिमा और पूर्णिमा से अमावस के हर पड़ाव में ही दक्ष प्रजापति की कन्याएं निवास करती हैं, शेष दिवस शिव, शक्ति के मध्य चन्द्रमा रूपी मन का निवास है।

'प्रभास क्षेत्र' याने 'विवेक'। मन जब विवेक को धारण करता है तो उसे आत्मा की ओर बढने का मार्ग प्राप्त

(शेष पृष्ठ 26 पर)

जब धड़ ने अंगरखे से तलवार पौंछ तलवार सौंपी

– युधिष्ठिर

लोगों के लिए तो यह भी आश्चर्य है कि सिर कटने के बाद धड़ भी लड़ सकता है क्या? लेकिन इसको क्या कहेंगे जब धड़ ने अंगरखे से तलवार पोंछ तलवार सौंपी। बौद्धिक कार्यक्रम में तनसिंह जी इसके बारे मैं बताया करते थे! इससे भी आगे की बात एक और है जो आगे प्रकट होगी।

यह कहानी है विश्वास की, भरोसे की, जबान की। जब दूसरी जाति हम पर विश्वास करती थी! हम अपना वचन निभाते थे। स्वामिभक्ति स्वामी के वचन को जीना है। जब देवी स्वयं धरती पर उतरती थी! वो कर्म करवाती थी!

क्या वो जमाना था! क्या वो नजारा था! इतिहास क्षत्रिय को एक विशेष थाती देने को आतुर था। जब मरने के लिए कोई घर से संसार में निकला था। संसार में जहाँ मोह पाश का बाण मोह को और बढ़ाता है, जहाँ जीवन बढ़ाने का उपाय किया जाता है, वहाँ कोई था जो जीवन घटाने का मार्ग निकाल लेता है। संसार का व्यवहार तो जीवन की भिक्षा मांगने का है पर कोई मृत्यु के लिए आहें भर रहा था। लेकिन ये परिस्थितियाँ ऐसे ही नहीं बनी, इसका जनक तो पिता के साथ हुआ वह विवाद था।

काली के सिर पर फिर सलवटें पड़ी, उसे कुछ नया करना था। किसी और पुत्र को बलिवेदी पर बिठाना था। अब किसकी बारी थी। कौन था वो जो सहस्त्रों सुखों को धारण करने वाला था। यही विचार मुझे लोहियाणागढ़ ले गया। जिसे आज जसवन्त नगर कहते हैं। यहाँ के ठाकुर धींगजी देवल प्रतिहारों की देवल शाखा से थे। वो डाकुओं और लुटेरों का जमाना था।

लोहियाणे के एक सेठ के बेटे का संबंध उदयपुर हुआ था। उन दिनों घर में बड़े-बुजुर्गों के साथ-साथ गाँव के ठाकुरों से सलाह ली जाती थी। वो मुखिया होते थे उन्हीं का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य हुआ करता था। वो उनके हित में ही निर्णय लेते थे। यह संबंध भी ठाकुर साहब की इच्छा से ही हुआ था। उन दिनों उदयपुर आना जाना असुरक्षित था। डाकू-लुटेरे जगह-जगह घात लगाए बैठे थे। सेठ को एक बार तो भय हुआ पर ठाकुर साहब के स्वयं बारात में चलने का कहने पर सेठ निश्चिंत हो गया। जो दिखाया जा रहा है कि पहले जातियों में मतभेद नहीं था, पहले आपसी घनिष्ठता थी। भरोसा था। हमारे पूर्वज शोषण करने वाले नहीं रक्षण करने वाले थे।

लगभग एक वर्ष बाद जब विवाह तय हुआ तब ठाकुर साहब को बारात में चलने का निमंत्रण मिला। उस समय ठाकुर साहब अस्वस्थ थे लेकिन उन्हें अपना दिया हुआ वचन भी याद था। प्रण पर प्राण देने वाले ने अपने विश्वासपात्र धूड़जी को साथ भेजा। अपने स्वामी के वचन से वचनबद्ध धूड़जी बारात के साथ चल पड़े।

आगे संकड़ी घाटी में बारात का प्रवेश हुआ। सुरक्षा की दृष्टि से धूड़जी कभी बारात के आगे तो कभी पीछे चल रहे थे। उनकी नजरें चारों ओर थी कि कहीं कोई चूक न हो जाए। थोड़ा आगे जाते ही डाकुओं ने धावा बोल दिया। वो बारातियों से गहने-आभूषण लुटने लगे। बाराती भय के मारे देने भी लगे। इतने में धूड़जी वहाँ पहुँच गये। धूड़जी का परिचय पाते ही डाकुओं ने बारात लूटने का अपना मानस बदल दिया। सबको अपने-अपने गहने व आभूषण वापस लौटा दिए। डाकुओं को 25-30 रुपये देकर बारात उदयपुर निकल गई।

जब डाकुओं के मीणा सरदार को इसका पता चला तो वो बहुत नाराज हुआ। उसने अपने साथियों को डाटा-फटकारा कि क्यों वापस आ गये। धूडजी का कहने पर तो वो और नाराज हो गया ''क्या तुम्हारे पास बारूद और बन्दूक कम पड़ गये थे। इस बार मैं साथ चलूँगा।''

बारात सकुशल शादी करके वापस लौट रही थी।

कालचक्र चल रहा था। अनहोनी होने वाली थी। बारात अपने गंतव्य स्थान की ओर बढ़ रही थी। सेठ ने संतोष का घूंट पी रखा था। कौन जानता था कि अब जो होने वाला है उसे अच्छा करने का कोई ठान लेगा। संकरी घाटी में बारात का प्रवेश हुआ सामने लुटेरे रास्ता रोके खड़े थे। धूडजी ने डाकुओं को फिर समझाया। लेकिन इस बार डाकू सरदार साथ था उसने परवाह नहीं की। डाकुओं ने बारात को लूटना प्रारम्भ कर दिया। धूड़जी की आंखें क्रोध से लाल हो गई। रजपूती आज ही तो यौवन में आयी थी। धूड़जी यमराज बनकर डाकुओं पर टूट पड़े। रक्त से घाटी की रेत लाल हो गई। कहीं मुंड गिर रहे थे तो कहीं धड़। धूड़जी की तलवार रक्त से लाल हो गई, उससे गिरती रक्त की बूंदें डाकू सरदार के लिए चिंता का विषय था। अब भय से पीड़ित और अपनी मौत को सामने देखकर सरदार ने पीछे से वार किया। धूड़जी का सिर धड़ से अलग जा गिरा। सारे डाकू यमलोक की सहर पर जा चुके थे। धूड़जी के धड़ ने डाकू सरदार का पीछा किया। 20 कदम पर जाकर उसको मार गिराया। धूड़जी का शीश कटा शरीर (धड़) वापिस मुड़ा, सेठ के पास आकर रुका, अपनी तलवार अंगरखे से पौंछी और दोनों हाथ जोड़कर ठाकुर साहब को अभिवादन दिया और धरती पर गिर पड़ा। कर्तव्य पथ पर अमर होने वालों में एक और नाम जुड़ गया। जीवन का मोह त्याग जिसने धर्म का मार्ग चुना। सब मूक बधिर होकर कुछ समय पूर्व हुए ताण्डव को देख रहे थे। सच है क्षत्रिय अपने लिए नहीं दूसरों के अधिकार की रक्षा करने के लिए जीता है। थोड़ी देर बाद सेठ की तन्द्रा टूटी।

सेठ ने अपना माल बटोरना प्रारम्भ कर दिया, सारा माल गाड़े में भरा। धूड़जी की मृत देह को गाड़ी पर लिटाया और वहाँ से प्रस्थान किया। सेठ के मस्तिष्क पटल पर दृश्य अभी भी चल रहे थे। घाटी की चीखों की गूंज अभी भी उसके कानों में सुनाई दे रही थी। वो भुलाने की कोशिश कर रहा था पर जैसे ही धूड़जी के शरीर की ओर नजर जाती वो सहम जाता। क्या राजपूत की जान इतनी सस्ती होती है! कौन वहाँ सर्टिफिकेट देने वाला था? क्यों जीवन का कोई मोह नहीं? क्योंकि भद्रकाली अपने पुत्र को अपने से दूर नहीं रहने देती। जो माँ को प्रिय हो माँ उसी के सिर पर हाथ रख देती है। विचारों के द्वंद्व ने सेठ को झकझोरा और गाँव से कुछ दूर आने पर ठाकुर साहब को समाचार करवाया गया! धूड़जी का सुनते ही ठाकुर साहब दौड़ कर आये। सेठ ने धूड़जी द्वारा दी गयी तलवार, अंगरखा और हाथ जोड़कर अभिवादन दिया। एक तरफ गर्व से छाती फूल गई और दूसरी ओर दुख से अश्रु फूट पड़े। जिनके नेत्र सूर्य के समान लाल रहते थे, आज उन नेत्रों में वर्षा के बादल उमड़ आये। जिसके पराक्रम की धाक थी आज वह अजय योद्धा सो गया। निडरता और वीरता के धनी धूड़जी की प्रशंसा ने गाँव में विस्तार पकड़ा।

दुख के बादल धीरे-धीरे छंट गये और गर्व ने उसका स्थान ग्रहण कर लिया। धूड़जी का जीवन प्रेरणा बन गया। किस्से और कहानियों ने तूल पकड़ा। ठाकुर साहब की जीवन चर्या में अब यही बातें झलकने लगी। वे सबको धूड़जी की बहादुरी के किस्से सुनाने लगे। दिन बीते, महिने बीते, साल बीते पर ठाकुर साहब के मुँह से धूड़जी की तारीफ कम नहीं हुई। हर किसी आने-जाने वाले के सामने ठाकुर साहब बस धूड़जी की प्रशंसा के अलावा और कोई दूसरे शब्द नहीं कहते।

एक दिन ऐसे ही ठाकुर साहब किसी के सामने धूड़जी की तारीफ कर रहे थे। पास ही में बैठे नरपाल ने कहा ऐसी कौनसी विशेषता धूड़जी ने दिखाई। राजपूत का कर्म है लड़कर प्रजा की रक्षा करना। राजपूत पीढ़ियों से ये करते आये हैं। ठाकुर साहब ने कहा सिर कटने के बाद तलवार अंगरखे से पौंछकर म्यान करना कम विशेषता है?

''बाहर वाले पल्ले से मांजी या अंदर वाले पल्ले से!''

''ये ध्यान तू रख!''

''मैं ये छह महीने में ही करके दिखा दूँगा!''

बात मुँह से निकल गई! ठाकुर साहब बहुत पछताये पर अब नरपाल कौन सा मानने वाला था। सबसे कहलवाया

पर किसी की पार नहीं पड़ी। रिश्तेदारों का दांव भी व्यर्थ गया। आखिर में बहन की मदद ली गई। बहन ने कहा भाई तीन महीने मेरे ओढने कांचली के तो दे दे।

तो कहा ठीक है अब छह महीने नहीं तीन महीने में ही करके दिखाऊंगा। बात उलटी पड़ गई।

सबको पता था ये मरने के लिए घर से निकला है। नरपाल उदयपुर रियासत में उत्पात मचाने लगा पर कोई उसकी चुनौती स्वीकार नहीं कर रहा था। एक दिन दिल्ली के बादशाह के खजाने की टुकड़ी माल लेकर जा रही थी। उदयपुर वालों ने कुंवर से छुटकारा पाने का मौका देखा। कुंवर तक समाचार पहुँच गया।

कुंवर ने मुसलमान सेनापति को मेहमान कहकर सम्बोधित किया और कहा गोठ करेंगे और कल युद्ध। वो मान गया। तय यह हुआ-एक मुसलमान एक राजपूत लड़ेंगे। एक के कटने के बाद दूसरा आयेगा! लेकिन बाजी पलटती जा रही थी और यह तय हुआ दो मुसलमान और एक राजपूत। एक-एक कर कुंवर के सब साथी काम आ गये।

कुंवर और मुसलमान सिपहसालार बाहर बैठ कर ये देख रहे थे! फिर कहा अब क्या करें? तब यह तय हुआ कि कुंवर अकेला और सब मुस्लिम एक साथ। बस अब सपने को साकार करने का सुअवसर आ गया। दोनों ओर से योद्धा एक दूसरे पर टूट पड़े। नरपाल के वार से शत्रु चीत्कार कर उठे। नरपाल ने इतने धड़ गिराये कि यमदूतों को इकट्ठा करने में दिक्कत हो रही थी। यह मरना यहाँ की शान है, कहानी चरितार्थ कर रहा था। उसकी तलवार की जद में जो भी आया उसे दुबारा साँस लेने का मौका भी नहीं मिला। खून से होली खेलने वाले कुंवर की तलवार टूट गई। अब वो घिर गया था। सब उस पर टूट पड़े। सिर धड़ से अलग हो गया। पहले से साथ में आया नाई धड़ के पीछे-पीछे चल रहा था। अनेक दुश्मनों को यमलोक पहुँचाने के बाद कुंवर ने अंगरखा उतारा, अन्दर के पल्ले से कटारी पौंछी और म्यान में डालकर अंगरखा और कटार नाई को सौंपते हुए ठाकुर साहब को अभिवादन दिया।

माँ के चेहरे पर पड़ने वाली सलवटें अब सामान्य हो गई। कोई देवदूत आया और नरपाल को ले गया। सदियों से बलिदानों की झूलती यशोगाथाओं में एक और नाम जुड़ गया। नरपाल तो चिर निद्रा में सो गया लेकिन वो अंगरखा और कटार कह रहे थे-'वो भी एक क्षत्रिय था।'

मजबूत किला

एक साधु से उसके मित्रों ने पूछा- ''यदि दुष्ट लोग आप पर हमला कर दें तो आप क्या करेंगे?''

वह बोला- ''मैं अपने मजबूत किले में जाकर बैठा रहूंगा।''

यह बात उस साधु के शत्रुओं के कान तक पहुँच गई। उन्होंने एक दिन एकान्त में साधु को घेर लिया और कहा-''यह बताइये कि आपका मजबूत किला कहाँ है।''

साधु खूब हँसने लगा। फिर अपने हृदय पर हाथ रखकर बोला-''यह है मेरा किला।'' इसके ऊपर कभी कोई हमला नहीं कर सकता। शरीर तो नष्ट किया जा सकता है। पर जो उसके भीतर है, उसके रास्ते को जानना ही मेरी सुरक्षा है।

जो व्यक्ति इस मजबूत किले को नहीं जानता, उसका पूरा जीवन असुरक्षित है। प्रति क्षण शत्रुओं से घिरा है।

जिन्दगी का सत्य

– रश्मि रामदेरिया

''ममैवांशो जीवलोके जीवभूत: सनातन:।।''

गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा–''इस संसार में जीव बना हुआ आत्मा मेरा ही सनातन अंश है। परमात्मा के अंश होने के कारण वास्तव में हम ईश्वरा से दूर हो सकते ही नहीं और संसार के साथ मिलकर एक हो सकते ही नहीं–यही जिन्दगी का सत्य है। हमारे से खास भूल यह हुई है कि हमने अपने को संसार का और संसार को अपना मान लिया अर्थात् शरीर–संसार के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ लिया। क्रोध, दु:ख, ईर्ष्या, जलन, विचलित होना यह सभी इसी के कारण होता है। शरीर से हमारे को लाभ हो जाएगा–यह केवल हमारा वहम है।

स्थूल, सूक्ष्म और कारण–कोई भी शरीर काम नहीं आता–इस बात को समझ लेने से बहुत लाभ होता है। ना यह शरीर और ना ही शरीर से जुड़ी सभी वस्तुएँ काम आती हैं। मन–बुद्धि को अपना मानने से ही स्वयं सुखी–दु:खी होते हैं।

अगर संसार का असर पड़ जाए तो उसकी परवाह मत करो, उसको स्वीकार मत करो, फिर वह मिट जाएगा, असर शरीर–इन्द्रियाँ–मन–बुद्धि पर पड़ता है, हम पर नहीं। शरीर–संसार जड़ है और हम प्रभु के अंश चेतन हैं। आँखों, कानों, बुद्धि पर असर पड़ता है तो पड़ता रहे। मन–बुद्धि हमारे नहीं हैं। वास्तव में अपन सुखी–दु:खी नहीं होते, ज्यों के त्यों ही रहते हैं। अपन सिर्फ अपने पर असर मान लेते हैं क्योंकि अपने मन–बुद्धि को अपना मान रखा है जो कभी अपने थे ही नहीं।

निराशा में चित का रहा ना सहारा; माया को खूब जुटाई चैन गया सो न लौटा कभी भी, झूठी पड़ी रे कमाई मिसरी से मीठी थी यादें पुरानी हो गई हैं मेरी मजार रे। उसके परम बिन मनवा है सूना; जीवन में कैसी बहार रे?

हमारे और परमात्मा के बीच में जड़ता (शरीर–संसार) का परदा नहीं है, प्रत्युत जड़ता के सम्बन्ध का परदा है। और उसी कारण हम निराश, दु:खी होते हैं। हमारा मन विचलित होता है, हम परेशान होते हैं। जड़ता का सम्बन्ध अभ्यास से नहीं छूटता प्रत्युत विवेक विचार से छूटता है। जिन्दगी का सत्य यही है–हमारा सम्बन्ध परमात्मा के साथ है। इसलिये शरीर को निष्कामभाव पूर्वक दूसरों की सेवा में लगाने से अथवा तत्व की जिज्ञासा तेज होने से भूल मिट जाती है। मनुष्य को तत्त्वज्ञान हो जाता है; जीवनमुक्ति हो जाती है। परमात्मा के प्रेम की अभिलाषा जाग्रत होती है। प्रेम की इच्छा संपूर्ण जीवों की अन्तिम तथा सार्वभौम इच्छा है। मुक्ति तो साधन है पर प्रेम साध्य है।

साधन कम है फिर भी तुम पर आशाएँ हमारी,
कर्म कठिन है कोमल काया अग्नि परीक्षा तुम्हारी,
भूला पंथी भटक रहा तू बन जा रे ध्रुवतारा।
साथी सम्भल–सम्भल कर चलना बीहड़ पथ हमारा।।
है अंधियारा पर प्राची में झाँक रहा सवेरा।।

जैसे समुद्र से सूर्य–किरणों के द्वारा जल उठाता है तो उसकी यात्रा तब तक पूरी नहीं होती जब तक वह समुद्र में मिल नहीं जाता, ऐसे ही परमात्मा का अंश जीवात्मा जब तक परम प्रेम की प्राप्ति नहीं कर लेता, तब तक उसकी यात्रा पूरी नहीं होती। परम प्रेम का उदय होने पर मनुष्य जीवन पूर्ण हो जाता है फिर कुछ बाकी नहीं रहता।

मैं तो कई तो धार्यो ने कई व्हे गयो,
मारो मन अब रहयो पछताय हो कृपा रा सिन्धु
करूँ में तुम्हारी कैसे विनती टेर, मारो प्रेम गयो ने भ्रम रे गयो; मोपे माया क्यों दीनी धकेले रे;
कृपारा सिन्धु करूँ, मैं तुम्हारी कैसे विनती।।''

जो मनुष्य संपूर्ण कामनाओं को त्याग कर अंहकार-रहित और स्पृहारहित हुआ विचरता है; वही शान्ति को प्राप्त होता है। अन्दर से, मन से खुश, सदैव प्रसन्नचित रहता है।

आनन्द ही ज्ञान है। ''वासुदेव: सर्वमिति'' जैसे बर्फ में ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर जल ही जल है इसी प्रकार इस संसार के ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर परमात्मा ही हैं। जो पुरुष इन्द्रियों के समुदाय को भली प्रकार वश में करके मन-बुद्धि परे सर्वव्यापी, अकथनीय स्वरूप और सदा एकरस, नित्य, अचल, निराकार, अविनाशी सच्चिदानन्द घन ब्रह्म को निरन्तर एकीभाव से ध्यान करते हुए भजते हैं वे संपूर्ण भूतों के हित में रत और सब में समान भाव वाले योगी मुझको (प्रभु) को ही प्राप्त होते हैं-श्रीमद् भगवद गीता में यह श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन से कहा।

कलयुग में जितना हो सके हमें नाम जप करना चाहिये। उससे बढ़कर कुछ नहीं। जो भी कार्य करें अपने अन्दर भीतर मन को शान्त करके प्रभु को एक पल भी ना भूलें स्मरण करते रहें।

''अहंकार के बादल छाये; कुंठित उसमें ज्ञान हमारा;
जिज्ञासा के बन्धन खोलो, भेंट करो उपहार तुम्हारा।
ओ मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा करने वाली;
प्राणों में फिर अमृत को छलकाने वाली,
भक्ति भावना जाग री जाग चेतना-जाग री जाग री।''

अपने अन्तर मन को जगाना अति आवश्यक है; हम प्रभु के अंश हैं अपने आपको पहचानना होगा। समय सबसे बलवान है किसी के लिए रुकता नहीं है। हमें सही समय पर अपने आप को सही मार्ग की ओर अग्रसर करना होगा, जिन्दगी के सत्य को पहचानना होगा। ●

पृष्ठ 21 का शेष

सोमनाथ

होता है। आत्मा के एक स्वरूप 'सोमनाथ' शिव के दर्शन करता है। 'सोमनाथ' से सोम अर्थात जीवन दायिनी शक्ति (अमृत) प्राप्त कर मन स्वरूपी चन्द्रमा पुनः अपने पूर्ण स्वरूप को प्राप्त करते हैं। कालांतर में मनुष्य के लगातार अपने ही भीतर गति करते हुये आत्मा रूपी शिव की आराधना करते हुये, आत्मा से ज्ञान ज्योति प्राप्त करता आया है जो अज्ञानता के अंधकार में उसे प्रकाश की ज्ञान रूपी शांत, शीतल, किरण बन कर प्राप्त होते हैं। जिनको प्राप्त कर अमावस का काला चन्द्रमा भी शांत, शीतल, आरोग्य प्रदाता बन जाता है। पूर्णमासी का पूर्णचन्द्र बन जाता है।

आत्मा रूपी शिव से वरदान रूपी सत्यमार्ग जानकर मन रूपी चन्द्रमा इनमें सम रूप से वास करने लगा। इस विवेकरूपी 'प्रभास क्षेत्र' में 'सोमनाथ' आरोग्य और पोषण प्रदान करने वाली आत्मा के अस्तित्व को मनुष्य ने स्वीकार किया। इसे ही प्रभास क्षेत्र में 'सोमनाथ' ज्योर्तिलिंग के प्रतीक स्वरूप में शिव के यहाँ वास करने को ही हम पौराणिक कथा में देखते हैं।

इस भीतर की यात्रा की मनुष्य ने कालान्तर में कई महान आत्मा के स्वरूप में पहचान दी है कृष्ण, राम, जीसस, मौहम्मद, नानक, महावीर, बुद्ध, रामकृष्ण, सांई, चैतन्य, मीरा, तुलसी, कबीर, रैदास, प्रहलाद, राबिया, जुनैद, पलटू, सुन्दरदास, दादू, फरीद, बुल्लेशाह और अनगिनत ऐसे सितारे जो आसमान से अपना प्रकाश फैलाते हैं, टिमटिमाते हैं।

'सोमनाथ' से सोम प्राप्त करके इस संपूर्ण धरा पर कालान्तर में अमृत की बूंदों को छलकाते, वो अलमस्त पीर, फकीर, सूफी, संत, भक्त, पैगम्बर और गुरु।

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

माधोपट्टी (जौनपुर, उत्तर प्रदेश) प्रतिभाओं की खान

उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले का एक छोटा-सा गाँव माधोपट्टी एक अनूठी मिशाल प्रस्तुत कर देश के लिए प्रेरणा स्रोत बनता जा रहा है, इस अदने से गाँव ने अब तक 50 से अधिक आई.ए.एस., आई.पी.एस., आई.एफ.एस. और प्रांतीय सिविल सेवा के अनेक अधिकारी देने का कीर्तिमान स्थापित किया है।

इस गाँव में शिक्षा का स्तर सदैव से प्रशंसनीय रहा है। यहाँ हर घर में एक से अधिक स्नातक हैं। महिलायें भी पीछे नहीं हैं

यहाँ के जन्मे अधिकारियों के इतिहास का अध्ययन करने पर पता चलता है कि सबसे पहले सन् 1914 में इस गाँव के प्रख्यात शायर रहे वामिक जौनपुरी के पिता मुस्तफा हुसैन प्रांतीय सिविल सेवा के अधिकारी बने।

देश के स्वतंत्र होने के बाद सन् 1952 में इंदू प्रकाश सिंह का भारतीय विदेश सेवा के लिए चयन हुआ वे फ्रांस सहित कई देशों में भारत के राजदूत रहे। इनके बाद से यहाँ कुछ अधिकारी बनने का सिलसिला शुरू हुआ वह अनवरत जारी हैं। इंदू प्रकाश सिंह ने प्रतिस्पर्द्धा का ऐसा बीज बोया कि यहाँ हर युवा अपने को साबित करने के लिए मेहनत करने में लगा है।

इस गाँव के चार सगे भाईयों ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) में आकर जो इतिहास रचा वह आज भी कीर्तिमान है इन भाईयों में सबसे पहले 1955 में आई.ए.एस की परीक्षा में 13वीं रैंक प्राप्त करने वाले विनय कुमार सिंह का चयन हुआ, वे बिहार राज्य के मुख्य सचिव बने। फिर 1964 में क्षत्रपाल सिंह और अजय कुमार सिंह एक साथ आई.ए.एस. अधिकारी बने। क्षत्रपाल सिंह आगे चल कर तमिलनाडु के मुख्य सचिव रहे। चौथे भाई शशिकांत सिंह 1968 बैच के आई.ए.एस अधिकारी बने।

इनके परिवार का भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी बनने का सिलसिला यहीं नहीं थमा। चौथे भाई शशिकांत के सुपुत्र यशस्वी ने परीक्षा में 31वीं रैंक के साथ आई.ए.एस. अधिकारी बनने का गौरव प्राप्त किया।

गाँव की आशा सिंह 1980 में, ऊषा सिंह 1982 में, कुवर चन्द्रमौल सिंह 1989 में और उनकी पत्नी इन्दु सिंह 1993 में, अभिताभ सुपुत्र इन्दु प्रकाश सिंह 1994 में आई. पी.एस उनकी पत्नी सरिता सिंह 1997 में भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी बनी।

वर्तमान में इसी परिवार के प्रवीण सिंह सरकार के अकाउन्टेबिलिटि प्रोजेक्ट से जुडे हुए हैं। उनकी पत्नी मधुलिका सिंह पीसीएस है और उत्तर प्रदेश सरकार में फाईनेन्स एण्ड अकाउन्टस विभाग में अधिकारी है। विक्रम सिंह उत्तर प्रदेश ग्रेटर नोएडा में कॉमर्शियल टैक्स असिस्टेण्ट कमिशनर है। इसी परिवार की बहू शिवानी सिंह उत्तर प्रदेश में डिप्टी कलेक्टर है और देवेन्द्र सिंह जिला कृषि अधिकारी के पद पर हैं।

इस गाँव के अन्य अधिकारियों में राम मूर्ति सिंह, विद्या प्रकाश सिंह, प्रेमचन्द सिंह, महेन्द्र प्रताप सिंह, जयसिंह, ऋतुसिंह, अशोक, अशोक कुमार प्रजापति प्रकाश सिंह, राजीव सिंह, संजीव सिंह, आनन्द सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

सरकारी अधिकारी बनने के साथ ही दूसरे विभागों में भी गाँव के युवा और युवतियाँ नाम रोशन कर रहे हैं, अमित पाण्डे केवल 22 वर्ष की अल्पायु में ही 5 पुस्तकों का लेखन कर 2015 में प्रकाशित कर चुके हैं। इसी गाँव के

जन्मे जय सिंह विश्व बैंक मनीला में सेवारत है। डॉ. निरू सिंह लालेंद्र प्रताप सिंह वैज्ञानिक के रूप में भाभा अनुसंधान केन्द्र में तो ज्ञानु मिश्रा राष्ट्रीय अंतरिक्ष संस्थान इसरो में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। यहीं जन्मे देवनाथ सिंह गुजरात में वरिष्ठ अधिकारी है।

माधोपट्टी गाँव से प्रेरणा प्राप्त कर देश के अन्य गाँवों ने भी इस परम्परा को अपनाया है। इनमें से कुछ गाँवों का परिचय भी इस पुस्तक में कराया जा रहा है।

माधवरम (आन्ध्रप्रदेश)
सैन्य सेवा जहाँ की परम्परा है

माधवरम आंध प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले का एक गाँव है इस छोटे से गाँव के हर परिवार का कम से कम एक सदस्य सदैव सुरक्षा बलों में सेवारत रहकर देश की रक्षा करता आया है। कुछ परिवारों के तो चार-चार सदस्य सेना में रहे हैं।

इस गाँव को पिछले तीन सौ वर्षों से सुरक्षा सेनाओं में अपनी उपस्थिति बनाये रखने का गौरव प्राप्त है। यह गाँव 17वीं शताब्दी में गजपति राजवंश के राजा पुसापति माधवा वर्मा ब्रह्मा की सैन्य छावनी था। और उन्हीं के नाम से इस गाँव का नाम माधवरम पड़ा। लोक कहानियाँ यहाँ के वीरों की गाथाओं से भरी पड़ी हैं। सौ से अधिक परिवार अपने घरों को युद्धों में अर्जित सम्मान (जैसे पताका, हथियार मैडल आदि) से सजाते हैं। पूर्व में अपनी राजधानी को सुरक्षा प्रदान करने के लिए ओडिसा और उत्तरी आंध्र प्रदेश से सैनिकों को यहाँ लाकर बसाया गया था। इन्होंने अनेक लडाइयों में भाग लिया जिनमें बोबीली, पीठापुरम, पालनाडु, वारंगल और काकतिया के साथ हुए युद्ध भी शामिल हैं।

प्रथम विश्व युद्ध में इस गाँव के 90 सैनिकों ने भाग लिया और दूसरे विश्व युद्ध में तो यह संख्या बढ़कर 1110 हो गई थी। सेन्य सेवा यहाँ के लोगों के लिए जितनी आजीविका का विकल्प है उतना ही आजीविका चिर स्थायी परम्परा, जिसे यहाँ के लोग विकल्प सुरक्षित रखना चाहते हैं। स्वतंत्र भारत द्वारा लड़े गये सभी युद्धों में यहाँ के सपूतों ने न केवल भाग लिया बल्कि एक गौरवशाली इतिहास भी रचा है।

वर्तमान में भी इस गाँव के 300 सैनिक देश की सीमाओं पर तैनात हैं। भूतपूर्व सैनिक अपने नाम के साथ अपना पदनाम लगाकर संबोधित किया जाना पसंद करते हैं। यही नहीं यहाँ लडकियाँ भी सैनिक से विवाह रचाने में अपनी शान समझती हैं। यहाँ के गाँव वालों ने भी दिल्ली में स्थित 'अमर जवान ज्योति' से प्रेरित होकर एक सैनिक स्मारक का निर्माण करवाया है। माधवरम में भूतपूर्व सैनिकों की एक संस्था है जिसमें 1180 सदस्य हैं। इन लोगों का खून अभी भी गर्म है और देश सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। यहाँ के लोग अपने पूर्वज सूरमाओं का जैसे सुबेदार वेम्पल्ली वैकटचलम जिनको राव बहादुर के टाइटल से नवाजा था का पूर्ण श्रद्धा से सम्मान करते हैं।

तेलगु फिल्म निर्देशक राधाकृष्णा जगरलामुडी ने माधवरम के अनुपम इतिहास और संस्कृति से आकर्षित होकर फिल्म कांचे बनाई जिसको राष्ट्रीय पुरुस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसी गाँव के भूतपूर्व सैनिक उर्रिका सीतरमैया की पुत्री श्री रमना ने अपने गाँव पर एक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म तैयार की है।

माधवरम की परम्परा और गौरवशाली इतिहास का सम्मान करते हुए केन्द्र सरकार ने यहाँ सेना का एक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है। यह केन्द्र भारत डाइनामिक लिमिटेड के सहयोग से स्थापित किया जा रहा है। इस केन्द्र को लेकर इस क्षेत्र के नवयुवक बहुत उत्साहित हैं। वे मानते हैं कि अब उनका सेना में भर्ती होने का स्वप्न आसानी से पूरा हो जायेगा।

''जिंदगी के असली स्वाद को केवल वही लोग महसूस कर पाते हैं, जो इसके लिए संघर्ष करते हैं। संरक्षित लोग इससे पूर्णत अंजान ही रहते हैं।''

– कप्तान आर सुब्रमणयम कीर्ति चक्र

पिपलांत्री (राजसमंद, राजस्थान) पुत्रियां प्रकृति का अनुपम उपहार है

पिपलांत्री राजस्थान के राजसमंद जिले का एक गाँव है। राजसमंद कुछ वर्षों पूर्व तक तो देश विदेश में मार्बल के लिए विख्यात था। परन्तु अब यह अपने ही एक गाँव (पिपलांत्री) की विकास की कहानी और बेटियों के प्रति बदले सोच लिए भी विख्यात है। जिन बेटियों को देश के अधिकांश हिस्सों में बोझ समझा जाता है, वहीं इस गाँव में बेटी के जन्म पर जश्न मनाया जाता है।

बेटी के जन्म पर गाँव में हर्षोल्लास का माहौल ही नहीं बनता, बल्कि संबंधित परिवार वाले गाँव के सहयोग से 111 पौधे लगाते हैं और उनकी देख-रेख का संकल्प लेते हैं।

पिपलांत्री के विकास की कहानी ज्यादा पुरानी नहीं है। लगभग 12 वर्ष पूर्व तक यह गाँव संगमरमर का मलबा डालने का क्षेत्र बन चुका था। जिससे यहाँ न केवल पत्थरों के मलबे के पहाड़ कृषि भूमि को खराब कर रहे थे, बल्कि पर्यावरण को भी दूषित कर रहे थे। गाँव वाले सभी बड़ी लाचारी भरी जिंदगी जी रहे थे। सन् 2005 के चुनावों में गाँव वाले ही नौजवान श्याम सुन्दर पालीवाल को सरपंच चुना। पालीवाल के नेतृत्व और जन भागीदारी से इस ग्राम पंचायत ने विकास के नित नये सोपान रचना प्रारम्भ कर दिया। पिपलांत्री को दखकर गर्व होता है कि भारत गाँवों में निवास करती है। और अब ये गाँव भारत के लोकतंत्र को सही मायनों में परिभाषित कर रहे हैं। यह यहाँ के लोगों के पूर्ण सहयोग का ही परिणाम है कि अनेक वर्षो से सूखे की मार झेल रहे पिपलांत्री की पहाड़ियों से मीठे पानी के स्रोत फूट रहे हैं और पत्थरों पर फूल खिल रहे है। पूरे गाँव में पक्की सड़कें, हर घर में नल का कनेक्शन, दूधिया रोशनी से जगमगाती गलियाँ, स्कूल-कॉलेज, स्वास्थ्य केन्द्र, शौचालय, महापुरुषों की प्रतिमाओं से सजे चौराहे और स्थानीय लोगों को सुकून देता यहाँ का वातानुकूलित पंचायत भवन, हरियाली से आच्छादित और सभी आधुनिक सुविधाओं से पूर्ण यह गाँव अन्य गाँवों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

वृक्षारोपण इस गाँव की अनूठी परम्परा बन चुका है। इसकी शुरुआत हुई बेटियों के प्रति गाँव के लोगों की सकारात्मक सोच के साथ। गाँव के पूर्व सरपंच पालीवाल की एक बेटी थी, जिससे वे बहुत प्यार करते थे। उसके अचानक निधन ने पालीवाल को झकझोर कर रख दिया। इस सदमें से निकलने के लिए पालीवाल ने गाँव में बेटियों के प्रति लोगों का नजरिया बदलने की अपील की और कुछ ऐसे नियम बनाये जिनका सभी पालन करते हैं। गाँव में सहमति बनाई कि बेटियाँ प्रकृति का वरदान है, इसलिए बेटी के जन्म पर परिजनों को 111 पौधे लगाने हैं और उनकी पूरी देखभाल भी अपनी संतान समझकर करनी है।

गाँव में जैसे ही बेटी के जन्म का शुभ समाचार मिलता है तो पूरा गाँव उस घर पर इकट्ठा हो जाता है। माता-पिता को बेटी के जन्म की बधाई देते हैं और पेड़ लगाने का आग्रह करते हैं। जन्म के कुछ दिन बाद सभी लोग मिलकर वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेते हैं। वृक्षारोपण के क्षेत्र में एक सूचना पट्ट भी लगाया जाता है, जिस पर बच्ची का नाम, जन्म की तारीख, माता-पिता का नाम और पौधारोपण की तारीख लिखी होती है।

पेड़, पौधों में ऐलोवेरा, नीम, शीशम और आँवला को प्राथमिकता दी जाती है। जिससे आर्थिक लाभ के साथ स्वच्छ वातावरण भी उपलब्ध होता है।

गाँव में एक समिति का भी गठन किया गया है। यह समिति गाँव के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों का लेखा जोखा रखती है। इन परिवारों में जब बेटी पैदा होती है तो पंचायत की ओर से 21 हजार रुपये लेकर उस बच्ची के नाम 18 वर्ष के लिए बैंक में जमा करा दिये जाते हैं।

संरक्षकों से पंचायत एक शपथ पत्र लेती है जिसमें बेटी को पढाने, उसके भविष्य को सुरक्षित रखने और बालिग होने पर ही विवाह करना आदि शर्तें शामिल की जाती है।

(शेष पृष्ठ 31 पर)

अपनी बात

प्रेम भक्ति का आधार है। जिसके प्रति प्रेम नहीं, उसके प्रति भक्ति की बात करना केवल शाब्दिक प्रकटीकरण ही होता है। राष्ट्र के प्रति प्रेम नहीं हो उससे राष्ट्रभक्ति की आशा रखना नासमझी ही है। समाज के प्रति प्रेम नहीं हो और कहा जाए कि समाज की सेवा करके मैं समाज की भक्ति में लीन हूँ तो यह भ्रमपूर्ण घोषणा है। यही बात भगवान के प्रति भक्ति में भी पूर्णतया लागू होती है।

प्रेम एक भाव है जिसे आज के युग में खिलौना बना रखा है। प्रेम भाव के मूल तक तो पहुँच ही नहीं है। प्रेम न हो तो भक्ति संभव ही नहीं है। असल में प्रेम की पराकाष्ठा ही भक्ति है। एक बार संत नागार्जुन के पास एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि मुझे भी उस परम की यात्रा पर ले चलो। वह एक गरीब व्यक्ति था। संत ने उससे पूछा कि क्या तुमने किसी से कभी प्रेम किया है? उस व्यक्ति का जवाब था कि प्रेम, अब आपसे क्या छिपाना, मेरे पास एक भैंस है, उसी से मेरा प्रेम है। एक गरीब आदमी हूँ और तो मेरे पास कुछ है भी नहीं, मगर मेरी भैंस से मेरा बड़ा लगाव है। कभी जंगल में भटक जाती है तो मेरे प्राणों पर संकट पड़ जाता है। कभी बीमार हो जाती है तो मुझे चैन नहीं पड़ती। सीधा-सादा आदमी था नहीं तो इतनी सच्ची बात कैसे कहता? लोग तो बोलते हैं-हमें कृष्ण से प्रेम है। चाहे भैंस से भी न हो पर बात कृष्ण की करेंगे, कहेंगे हमें राम से प्रेम है। ऐसी ऊँची-ऊँची बातें करते हैं। राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति, अपने संगठन के प्रति प्रेम की बातें तो खूब करते हैं पर अधिकतर देखा गया है कि अधिकांश के पास अपने निजी स्वार्थ के प्रति प्रेम के अलावा केवल दिखावा ही है।

उस व्यक्ति ने संत को बताया कि अब आपसे क्या छिपाऊँ और तो किसी से मेरा प्रेम है ही नहीं। छोटा था तभी पिता नहीं रहे, माँ भी मर गई। गरीब आदमी हूँ, विवाह हुआ नहीं। और कोई मेरा है नहीं, बस यह एक भैंस ही मेरी है। संत ने उस व्यक्ति को सच्चा सीधा जानकर कहा-फिक्र न कर, इससे काम चल जाएगा। वह व्यक्ति ऐसा सुनकर बहुत चौंका और कहा-भैंस के प्रेम से काम चल जाएगा? संत ने कहा-बस भक्ति का सार सूत्र तो तेरे हाथ में है ही। इसको बड़ा करना होगा। इसको निखारेंगे। हीरा कीचड़ में पड़ा है, धो लेंगे। सोने में गन्दगी मिली है, तपा कर निखार लेंगे, कुंदन बना लेंगे।

भक्ति भाव का वास्तविक अर्थ ही है-प्रेम की प्रगाढता। प्रेम का शुद्ध हो जाना। प्रेम का निष्कलुष हो जाना, निष्कपट हो जाना। प्रेम का अहेतुक हो जाना। पर वर्तमान युग में जिसे प्रेम कहते हो, उसे पाप कहा जाता है। सदियों से यही समझाया जाता रहा है। इसका परिणाम यह हो गया कि हमारे परमात्मा से तो सम्बन्ध ही विच्छिन हो गये। क्योंकि प्रेम ही है जिससे परमात्मा से सेतु बन सकता है, पर उसे पाप करार दे दिया गया है। माँ से, पिता से, पत्नी से, पुत्र से प्रेम यदि पाप है तो भक्ति कैसे पनपे। ये सब पाप हो तो भक्ति सिर्फ थोथी होगी, औपचारिक होगी। वैसे तो इन सब प्रेमों में भक्ति की थोड़ी झलक छिपी है। जब एक माँ अपने छोटे बच्चे को दुलार करती है तो इस दुलार में यशोदा का कृष्ण के लिए दुलार छिपा है। उघाड़ना, निखारना, साफ करना है, लेकिन छिपा है। उस सार को समझने पर ही इसे निखारा जा सकता है, उसे साफ किया जा सकता है। इस प्रकार के पारिवारिक रिश्तों के प्रेम में भी कभी-कभी ऐसी ऊँचाइयाँ आती हैं प्रेम की। क्षुद्र से कहे जाने वाले प्रेम में भी कभी-कभी ऐसी तरंगें उठती हैं कि प्रेम कृष्ण हो जाता है।

जीवन से प्रेम करें, उसे अनेक-अनेक रूपों से चाहें। जीवन से भागें नहीं। पर जैसा जीवन है, उस पर ही रुक नहीं जाना है। इसे खूब निखारा जा सकता है। अपने जीवन को सुधारने के लिये, निखारने के लिये हमें एक साधन मिला है-श्री क्षत्रिय युवक संघ। उसकी हर गतिविधि

से प्रेम करो। जो भी कार्य करवाया जा रहा हो, या जो भी कार्य करने को कहा जा रहा हो, उसी के प्रेम में रम जाएँ। खेल हों, सहगीत हों, उनमें जो आनन्द आ रहा है, उसे गहरा बनाना है। गहरा बनेगा निखारने से। आसक्ति न हो, केवल प्रेम हो। आसक्ति बाधा पैदा करती है। पर मेरे संघ ने मुझे इस आनन्द से सराबोर किया है तो मैं इसी में रमा रहूँ। जिससे भी प्रेम जुड़ जाता है, उसी को पवित्र कर देता है। प्रेम की यह महिमा है।

परमात्मा कहाँ है, इसकी फिक्र छोड़ें, अभी तो फिक्र यह करनी है कि मैं कहाँ हूँ? मेरा प्रेम कहाँ है? इस प्रेम को हम कैसे निखारें? उस प्रेम को हम कैसे रोज-रोज साधें, जैसे कोई वीणा को साधता है और उसी में खो जाता है। इस जीवन के प्रेम की वीणा पर, अपने दायित्व के प्रेम की वीणा पर निरंतर अभ्यास करें, इसमें सोए सरगम हैं, संघ साधना से इन्हें जगाएँ। उन सारे सरगमों का जग जाना और उनका एक साथ एक लयबद्ध हो जाना, एक लय से छंदबद्ध हो जाना भक्ति है। संघ साधना हमें निखारती है। हमें संस्कारित करती है। जीवन में संस्कार आएं तो जीवन निखरता है। जीवन का निखरना परमात्मा प्रेम का अवतरित होना है। यह निखार जितना ऊँचा होगा, भक्ति भी उतनी ही प्रगाढ होगी।

श्रद्धा-संशय स्नेह-घृणा के, बीच झूलता जीवनझूला
धरा न छोड़ी स्वर्ग न देखा, बीच गगन में उड़ता भूला
व्यर्थ द्वन्द्व के भेद भुलाने वाली
एक सूत्र में एक राह पर लाने वाली-सुप्त एकता।।
जाग चेतना-जाग री जागरी! ●

पृष्ठ 29 का शेष

आदर्श और अनूठे गाँव

समय और अनुभव के साथ विकास के नये नये प्रयोग भी जारी हैं। इस गाँव को निर्मल गाँव का पुरुस्कार भी मिल चुका है।

पिपलांत्री के विकास और इसमें प्रचलित वृक्षारोपण की अनूठी परम्परा की कहानी डेनमार्क के स्कूलों में पढ़ाई जाती है। वर्ष 2014 में डेनमार्क से मास मीडिया यूनिवर्सिटी की दो शोधकर्ता यहाँ आई थी। उन्होंने बताया कि उनकी सरकार ने विश्व के अनेक देशों के ऐसे 110 प्रोजेक्टस में से पिपलांत्री गाँव के मॉडल को टॉप 10 में शामिल किया है। इस गाँव की कहानी वहाँ के प्राईमरी स्कूल के बच्चों को पढ़ाई जाती है।

हाल ही में राजस्थान सरकार ने 7वीं और 8वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में इस गाँव की कहानी को शामिल किया है।

गाँव की इस खास पहल को देखने के लिए विदेशी डाक्यूमेन्ट्री (वृत चित्र) बनाने और शोध करने वाले आते रहते हैं।

पिपलांत्री गाँव ने एक नई सोच को जन्म देकर प्रदेश और देश का मान बढाया है और एक अनुकरणीय परम्परा का श्री गणेश किया है। इस गाँव के पूर्व सरपंच श्री श्याम सुंदर पालीवाल और ग्रामवासी बधाई के पात्र हैं।

नित नये प्रयोगों और परम्पराओं के अन्तर्गत अब गाँववासी के निधन पर उसकी स्मृति में भी उसका परिवार 11 वृक्ष लगाता है।

(क्रमशः)

ईमानदारी वैभव का मुँह नहीं देखती, वह तो मेहनत के पालने पर किलकारियाँ करती है और संतोष, पिता की तरह उसे देखकर तृप्त हुआ करता है।

– रांगेव राघव

शिविर सूचना

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के आगामी प्रशिक्षण शिविर निम्न प्रकार से होने जा रहे हैं -

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि.	1.8.2024 से 4.8.2024 तक	श्री प्रताप राजपूत छात्रावास, नीमकाथाना **संपर्क सूत्र–** श्री गिरवर सिंह बुदोली–7062539305
02.	प्रा.प्र.शि.	8.8.2024 से 11.8.2024 तक	श्री कुलेटी माताजी मंदिर आजबर, तहसील–भीनमाल, जिला जालौर (रामसीन–जसवंतपुरा मार्ग पर बूगांव से आगे माता जी का दरवाजा है, वहाँ से 2 किलोमीटर दूर शिविर स्थल है। बसों की व्यवस्था है।) **संपर्क सूत्र–** अर्जुन सिंह देलदरी– 9828456333 राजेन्द्र सिंह आकोली– 9929371996
03.	प्रा.प्र.शि.	16.8.2024 से 19.8.2024 तक	छपारा, प्रान्त–लाडनूं (नागौर) **संपर्क सूत्र–** श्री रविन्द्र सिंह छपारा– 9649740225
04.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	सांतलपुर, जिला–पाटन (गुजरात)
05.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	डेल गाँव, तहसील थराद, जिला–बनासकांठा (गुजरात)
06.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	वरियाडा, तहसील–शिव, जिला–बाड़मेर
07.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	चाडी, तहसील–रामसर, जिला–बाड़मेर
08.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	हंदा, प्रान्त–नोखा (बीकानेर से बसें उपलब्ध हैं) **संपर्क सूत्र–** 9928514502
09.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	दुलमेरा, प्रान्त–बीकानेर ग्रामीण, (बीकानेर से बसें उपलब्ध हैं) **संपर्क सूत्र–** श्री नारायण सिंह किस्तुरिया– 9782705887
10.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	श्री सिगोतर माताजी मंदिर इशरोल, जिला–सांचौर (हाडेचा से बस द्वारा गोमी उतरें, वहाँ से टैक्सी की व्यवस्था है।) **संपर्क सूत्र–** हीर सिंह कीलवा– 9982985954 ईश्वरसिंह चौरा– 9982411848
11.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	श्री आशापुरा माताजी मंदिर धामसीन, रानीवाड़ा, जिला–जालौर (रानीवाड़ा से बस व टैक्सी उपलब्ध है) **संपर्क सूत्र–** प्रवीण सिंह सुरावा– 9660080210 रेवंत सिंह जाखड़ी– 9887636320
12.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	अखाधणा, जिला–फलौदी

13.	प्रा.प्र.शि.	17.8.2024 से 20.8.2024 तक	रावलगढ़, तह. शेरगढ़
14.	प्रा.प्र.शि.	23.8.2024 से 26.8.2024 तक	बाजटा-केकड़ी-देवली से आने वाले रामथला चौराहा से आएँ। सावर बिसुंदनी से राजपुरा टांका वास होकर बाजटा माताजी मंदिर शिविर स्थल पहुँचें।
15.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 27.8.2024 तक	श्री जलंधर नाथ जी मंदिर धाणसा, तहसील भीनमाल, जिला-जालौर (जालौर-भीनमाल रेल मार्ग से मोदरान स्टेशन उतरें, वहाँ से निजी बसें उपलब्ध हैं।) **संपर्क सूत्र-** विक्रम सिंह धाणसा- 8107135547
16.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 27.8.2024 तक	श्री कांबेश्वर महादेव मंदिर, काना कोलार बेड़ा, जिला-पाली (शिवगंज व बेड़ा गाँव से बसें व टैक्सी उपलब्ध है।) **संपर्क सूत्र-** मंगल सिंह बेड़ा- 7073705963 उदय सिंह बेड़ा- 9413500869
17.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 27.8.2024 तक	कानासर, तहसील एवं जिला-बीकानेर
18.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 26.8.224 तक	अनापुर छोटा, तह. धानेरा, जिला-बनासकांठा (गुजरात)
19.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 26.8.2024 तक	मालपुर, तहसील-मालपुर, जिला-अरवल्ली (गुजरात) **संपर्क सूत्र-** 9428027928
20.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 27.8.2024 तक	नुआ, रतनगढ़, जिला-चूरू **संपर्क सूत्र-** 8209765794
21.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 27.8.2024 तक	बांदरा, प्रान्त-बाड़मेर ग्रामीण (बाड़मेर से कवास मार्ग पर)
22.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 27.8.2024 तक	मालण माता, हरसाणी से रोहिड़ाला मार्ग पर स्थित
23.	प्रा.प्र.शि.	24.8.2024 से 27.8.2024 तक	राज किड्स एकेडेमी, राहोली, तह. निवाई (टोंक)
24.	प्रा.प्र.शि.	24.8.224 से 27.8.2024 तक	मसीतावाली हैड (अनूपगढ़)
25.	प्रा.प्र.शि.	12.9.2024 से 15.9.2024 तक	श्री हनुमान जी की बगीची बाला, तह. आहोर, जिला-जालौर (बिशनगढ़ एवं भाद्राजून से बसों की सुविधा है।) **संपर्क सूत्र-** बृजपाल सिंह बाला- 8094092013 राजेन्द्र सिंह भवराणी- 9413123738
26.	प्रा.प्र.शि.	12.9.2024 से 15.9.2024 तक	श्री लोलेश्वर महादेव मंदिर दासपां, तह.-भीनमाल, जिला-जालौर (भीनमाल बागोडा व सायला से बसों की सुविधा है।) **संपर्क सूत्र-** भैरूंपाल सिंह दासपा- 9769218714 चंदन सिंह कावतरा- 8058853853

27.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	श्री राम बल्लू जी राजपूत छात्रावास सांचौर **संपर्क सूत्र–** सरूप सिंह केरिया– 9549652662 प्रेम सिंह अचलपुर– 9828099602
28.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.9.224 से 16.9.2024 तक	पिथोरा गार्डन, जोधपुर
29.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	मोटाई, जिला–फलौदी
30.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	कुड़, तह. भोपालगढ़
31.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	जोधासर, प्रान्त–श्रीडूंगरगढ़ (जयपुर–बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग–11 पर स्थित है।) **संपर्क सूत्र–** 9001772703, 9783781111
32.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	मोरखाणा, प्रान्त–नोखा (नोखा व बीकानेर से बसें उपलब्ध हैं।) **संपर्क सूत्र–** भंवर सिंह मोरखाणा– 9928514502
33.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	बादरे जी की ढाणी, वांकलपुरा, महाबार (बाड़मेर से नोखड़ा सड़क मार्ग पर स्थित)
34.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	मेदुसर, गडरारोड़, बाड़मेर
35.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	गौड़ा, सेड़वा, जिल–बाड़मेर
36.	प्रा.प्र.शि.	13.9.2024 से 16.9.2024 तक	महारानी पब्लिक स्कूल, दांतिल रोड़, खड़ब, नारेहेड़ा पाटन, पावटा, अजीतगढ़ से नारेहेड़ा के साधन उपलब्ध हैं।
37.	प्रा.प्र.शि.	14.9.2024 से 16.9.2024 तक	तावी, तहसील–लखतर, जिला–सुरेन्द्रनगर (गुजरात) **संपर्क सूत्र–** 9825403101
38.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	14.9.2024 से 16.9.2024 तक	काणेटी, तहसील–साणंद, जिला–अहमदाबाद (गुजरात) संपर्क सूत्र– 8140312421
39.	प्रा.प्र.शि.	14.9.2024 से 17.9.2024 तक	मेमदपुर, तहसील–वडगाम, जिला–बनासकांठा (गुजरात)
40.	प्रा.प्र.शि.	14.9.2024 से 17.9.2024 तक	भेंसाणा, तहसील–मेहसाणा, जिला–मेहसाणा (गुजरात)
41.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	14.9.2024 से 17.9.2024	कामली, तहसील–ऊंझा, जिला–मेहसाणा (गुजरात)

गजेन्द्र सिंह आऊ

शिविर कार्यालय प्रमुख (श्री क्षत्रिय युवक संघ)

IHF हैंडबॉल चैंपियन ट्रॉफी 2024 में
स्वर्ण पदक विजेता बनने पर भारतीय टीम के
नयन सिंह शेखावत (दूजोद, सीकर) को
दूजोद (बड़ा पाना) की तरफ से
बहुत बहुत हार्दिक शुभकामनाएं।

विश्वसनीयता में एक मात्र नाम

Certified Hallmarked Jewellery

SHIV JEWELLERS

DIAMOND • KUNDAN • GOLD • SILVER

विशेषज्ञ: सोने व चांदी की पायजेब, अंगूठी, डायमंड, कुन्दन के आभूषण बैंकॉक आईटम्स आदि

शुद्ध राजपूती ट्रेडिशनल ज्वेलरी व सोने, चांदी, कुंदन और डायमंड ज्वेलरी के होलसेल विक्रेता

पता – सफायर कॉम्प्लेक्स, जैन मेडिकल के सामने, खातीपुरा रोड, झोटवाड़ा, जयपुर

मो.: 07073186603 Follow us on Instagram @shivjewellersjaipur

Hukam Singh Kumpawat (Akadawas, Pali)

अगस्त, सन् 2024

वर्ष : 61, अंक : 08

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60

डाक पंजीयन संख्या – Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,

जयपुर-302012

दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com

Website : www.shrikys.org

श्रीमान्...

....

....

श्री संघशक्तिप्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कोर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष -6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक राजेंद्र सिंह राठौड़। Email : sanghshakti@gmail-com | Website : www-shrikys-org